प्रकाशक—
श्री मां मन्दिर
मण्डी धनौरा, मुरादाबाद
उत्तर-प्रदेश

दूसरी बार, सन् १९५२ ई०

मूल्य १।)

मुद्रक—
त्यागी फाइन आर्ट प्रेस,
कटरा खुशहालराय,
देहली।

सुखद स्मृतियाँ

जब पूज्य मालवीय जी के आदेशानुसार समस्त भारतवर्ष में ५ मार्च सन् १९४४ ई० को राष्ट्रमाता कस्तूरबा का दिवस मनाया गया तो ! उसी दिन गाँधी ग्राउण्ड देहली में एक विराट शोक सभा हुई। सभानेत्री थीं श्रीमती सुब्बा रायन।

उन हजारों आखों के साथ मेरी भी दो आंखें स्वर्गीय "बा" को श्रद्धांजलि अर्पित कर रही थीं। उसी समय हृदय मे विचार उठा क्यों न लिखूं 'बा' की स्मृति में और निश्चय ही कर लिया।

कुछ ही दिन के पश्चात् 'श्री कस्तूर बा गांधी' प्रजातन्त्र पुस्तकालय किशनगंज देहली के संस्थापक और मेरे परम मित्र श्री पं० रामप्रसाद जी ने अनुरोध किया कि—दुनिया करेगी ! 'कस्तूर बा' स्मारक के लिए पिछत्तर लाख रुपये की थैली भेंट ! और तुम करो बापू को अपनी 'कस्तूर बा' पुस्तक अर्पण। बात सर्वथा उचित थी मानली गई।

पर एक बात और भी तो थी। बापू समय समय पर अनेक बार देहली आये, उनके भाषण तथा प्रवचन भी हुये। किन्तु मैंने आज तक जान बूझकर न तो कभी बापू के दर्शन ही किये ! न कोई भाषण ही सुना। हाँ समाचार पत्रों में अवश्य पढ़लेता था।

बापू के प्रति मेरी तो यह धारणा थी कि संसार के इस सर्व श्रेष्ट महापुरुष के दर्शन 'जी भर कर' किये जाँय और उनके पास से अपने जीवन के लिये प्रसाद रूप कुछ लेकर आने की भी तो सामर्थ हो। भीड़ में धक्के खाने से क्या लाभ।

इस समस्या के सामने आते ही ! मुझे कुछ ऐसा आभास हुआ कि—सम्भव है वह शुभ अवसर अब आ ही गया हो। किन्तु मैं तो अभी तक अपने को असमर्थ ही समझता था।

हृदय में यह विचार जम ही तो गया कि—स्वयं बापू को 'सेवा ग्राम' में जाकर कविता सुनाई जाय और फिर करूं। यह 'कस्तूर वा' पुस्तक बापू को अर्पण। यह थी मेरी अभिलाषा! किन्तु पूरी कैसे हो। क्या? बापू मेरी कविता सुनने के लिये मुझे समय देंगे। यही एक चिन्ता और शका थी। किन्तु मैं सदैव 'आशावादी' रहा हूं। मेरे साथ मेरे मित्र प० रामप्रताप और थे।

बापू के सबसे छोटे पुत्र 'श्री देवीदास गांधी' जो देहली में हिन्दुस्तान टाइम्स पत्र के सम्पादक हैं! हम दोनों उनसे मिले। हमारे प्रोग्राम से वह बहुत प्रसन्न हुये और उन्होंने पूर्ण विश्वास दिलाया कि—मैं परसों स्वय वर्धा चलूंगा और आपकी इच्छानुसार ही आपका प्रोग्राम पूरा कराने का भरसक प्रयत्न करुंगा।

थोड़ी देर के बाद वह बोले। यदि एक काम और करलो तब तो बहुत ही! अच्छा हो। आजकल देहली मे श्रीमती 'मीराबेन' अपना इलाज करा रही हैं। आप उनको यह कविता अवश्य सुनाइये। नि सन्देह वह प्रभावित होंगी। क्योंकि "बा" से उनका घनिष्ट सम्पर्क रहा है। जब उनका रुख देखो तो उनसे बापू के नाम एक पत्र लिखवा लेना।

हम वहीं पहुचे गये और ठीक वैसा ही हुआ भी। कविता सुनकर 'श्रीमती मीराबेन' की आखों मे आसू छलक आये। और वह स्वयं ही बोल उठीं।

'सेवाग्राम जाकर बापू को यह कविता अवश्य सुनाओ।'

'क्या? बापू मेरी कविता सुनने के लिये समय देंगे।'

'देंगे क्यों? नहीं। जरूर देंगे! लो मैं चिट्ठी लिखेदेती हूँ।'

और उन्होंने फौरन ही एक पत्र बापू के नाम लिख ही तो दिया। तब मैंने उनसे कहा.—

इस लिफाफे पर पता और लिख दीजिये तथा साथ ही यह भी लिख दीजिये कि—इस पत्र को यह आदमी स्वयं अपने हाथ से बापू को देगा बीच में कोई रोके नहीं। क्यों कि बापू के पुरछल्ले मुझ जैसे साधारण आदमी को तो, वहां तक पहुंचने भी न देंगे। वह हंस पड़ीं। और उन्होंने सब कुछ वैसा ही लिख भी दिया।

मोर के परों से बना हुआ एक सुन्दर 'मोरछल' मुझे सौंपते हुये उन्होंने कहा कि—मेरी ओर से बापू को! यह भेंट कर देना। थोड़ी देर और बैठने के पश्चात् हम वहा से चले आये।

मौ० जाकिर हुसैन साहब (जामिया मिलिया) सेठ लक्ष्मी नारायण जी गाडोदिया, श्री देवीदास गांधी और हम दोनों मित्र देहली जंकशन से १ अक्टूबर सन् १६४२ ई० को वर्धाके लिये चल दिये। अगले ही दिन प्रातःकाल ठीक सात बजे हम वर्धा पहुच गये। हमारे ठहरने का प्रबन्ध सेकसरिया कालिज के होटल में हुआ। स्नान आदि से निवृत होकर सेवाग्राम आगये। क्योंकि आज ही तो थी 'गांधी जयन्ती'।

सभा के लिये शामियाना तानने तथा झंडी आदि लगा कर सजाने का प्रबन्ध हो रहा था। किन्तु मेरी आँखें खोज रही थीं बापू को! और यह सोच रहा था कि—जब बापू आयेंगे तो मैं उनके चरण छूकर ही उनका अभिवादन करुंगा। इतने ही में न जाने क्यों? सभी लोग चुप हो गये। मैंने पीछे की ओर मुंह फेर कर देखा! तो दङ्ग रह गया। मेरा ही पीठ के पास बापू खड़े हुये थे। मैं उनको न हाथ जोड़ सका और न चरण ही छू सका।

एक ओर को हट कर चुप खड़ा हो गया और देखता रहा बहुत देर तक उस तेजस्वी का मुख। बापू मौन थे इशारे ही से समझा रहे थे कि—इस आडम्बर को हटा दो और सभा के लिये फर्श ही बिछाओ। यह समझाकर वह स्नान करने चले गये।

हम भी आश्रम की सैर करने लगे। बापू की बकरी 'निर्मला' को देखने के पश्चात् प्रो० भसाली के पास आकर बैठ गये। वह चर्खा कात रहे थे। मेरा परिचय जान कर! उन्होंने मुझे कविता सुनाने की आज्ञा दी और वह बहुत देर तक सुनते रहे। इसके पश्चात् तेल घानी में एक दुकानदार के यहां भोजन करके हम फिर आश्रम में आगये। उस समय बापू अपने 'आफिस' म थे। आफिस भी क्या था एक मामूली सी झोंपड़ी थी।

हाथ में पत्र और 'मोरछल' लेकर जब मैं आगे को बढ़ा! तो केनुगाधी और बापू के सेक्रेट्री श्री प्यारेलाल जी मेरे पास आये और बोले कि—तुम यहीं रहो, लाओ हम बापू को दे देंगे। मैंने कहा यह क्यों ? खुद जाकर बापू को दूंगा। आपने पढ़ा नहीं! लिफाफे पर क्या लिखा है। वह चुप होगये और मैं चला गया। बापू को प्रणाम करके पत्र उनके हाथ मे दे दिया।

लिफाफे पर लिखे हुये पते को पढ़कर 'हसते हुये' बापू ने लिफाफा खोल कर पत्र पढा और मुझसे बोले।

'कौन सी है वह किताब! लाओ' मैंने पुस्तक उनके हाथ मे दे दी। 'अच्छा अभी छपी नहीं है।' यह कहकर बापू उस कापी के तीन चार पन्ने उलट कर पढने लगे। यकायक पुस्तक बन्द करके बोले—लो यह अपनी किताब! और अब तो तुम जाओ, मेरे पास समय भी नहीं है। क्योंकि अभी थोडी ही देर बाद मुझे सभा मे बोलना है। इस समय कविता सुनने से न मालूम क्या प्रभाव पडे। मैं तुम्हे खुद बुलवा लूगा! जरूर सुनूगा तुम्हारी कविता। हाँ! वह मोरछल तो लाओ! अच्छे तो हैं मीराबेन।' तब मैंने उनको मोरछल देते हुये कहा—

'हा महाराज! आराम तो हो गया है किन्तु कमजोर हैं।'

'तुम कहां ठहरे हुये हो ?'

'सेकसरिया कोलिज के होस्टल मे ।'

'किसी बात की तकलीफ तो नहीं है ?'

'नहीं महाराज ! सब कुछ ठीक है ।'

'अभी तो तुम ठहरोगे न ?'

'जब तक आप कहेंगे ! तब तक ठहरा रहूँगा ।'

इसके परचात् वह अपने और काम में लग गये और मैं उनको प्रणाम करके बाहर आ गया।

सभा मे कुछ अधिक भीड़ नहीं थी। मुश्किल से पांचसौ आदमी होंगे। ठीक समयपर श्रीमतीसरोजनी नाइडू ने बापूके गले में सूत का माला डालकर माथे पर तिलक लगाया और हंसते हुये उनके गाल पर हल्का सा चपत लगाकर जैसे ही नीचे का बैठा ! तो बापू ने उसी समय हसकर सरोजनी नाइडू के सिर पर एक चपत मार ही तो दिया। सारी जनता हस पड़ी। बापू को जो कुछ कहना था वह उन्होंने कह दिया, तब उनको 'पिछत्तर लाख' रुपये की थैली भेंट करके सभा समाप्त हो गई।

तीसरे दिन बापू ने मुझे बुलवाया मैं वहाँ गया और कविता सुनाने लगा। काफ़ी समय के पश्चात् जब 'बा की चिता' शीर्षक कविता सुना रहा था तो बापू सभल कर बैठ गये। उनका हृदय भर आया और आखें सजल हो गईं। मैं देख रहा था बापू की मुखाकृति को। और जब मैंने 'नमामि मोहन ! नमामि मोहन ! 'जय मोहन ! जय जय मोहन' सुनाया तो उन्होंने मुझे कविता सुनाने से रोक दिया। और बोल उठे।

'मुझे दुःख होता है, इस कविता के सुनने से ! और कडे शब्दों मे कहूं ! तो घृणा भी होती है।'

विश्व बापू

मैं अवाक रहगया और देखता रहा बहुत देरतक बापू के मुंह को ! जो एक दम लाल हो गया था । फिर मुझसे वह नहीं बोले और न फिर मैंने ही । उनसे कुछ कहा । विना ही प्रणाम किये मैं वहां से उठकर सीधा वर्धा चला आया ।

सारा दिन और सारी रात बड़ी । ही बेचैनी से कटी । क्रोध के मारे मेरा हृदय जला जा रहा था । रातके एक बजे तक फुलिस्केप साइज के चार पेजों में, मैंने बापू के नाम उनकी कटु-आलोचना पूर्ण एक पत्र लिखकर । अपने मित्र रामप्रताप जी को सुनाया । जिसकी थोडी सी लाइनें नीचे लिखी हैं ।

क्या यही हैं । ससार के सर्व श्रेष्ट महापुरुष बापू । क्या यही हैं । मन, वचन, और कर्म से भी हिंसा न करने वाले अहिंसा के साक्षात् अवतार 'सत्य स्वरूप' बापू । क्या यही हैं । दीन, दुखी, पीड़ित, अनाथ, अछूत, असहाय, किसान, मजदूर आदि के लिये अपने हृदय में स्थान रखने वाले 'दया के समुद्र'बापू । क्या यही हैं । किसी भी साधारण से साधारण निरपराध व्यक्ति का अपमान न करने वाले राग द्वेष से रहित, पवित्र प्रेम की महान प्रतिमा 'विश्व विभूति' बापू । यदि यही हैं । तो मैं भर पाया ऐसे बापू से । धोका हैं । दम्भ है । पाखण्ड है । न जाने दुनियाँ क्यों ? इनके पीछे पागल हारहा है । क्योंकि यहतो —हृदय हीन हैं ! महान् क्रोधी हैं । जो स्वय शान्त न रह सके वह कैसा शान्ति का दूत । किसी के हृदय पर सीधा आघात करने वाले को और कहा भी क्या जा सकता है ।

पत्र को सुनाते सुनाते मैं रो पडा और अपने मित्र से कहा कि—मैं तो प्रात काल यह पत्र बापू को देकर देहली जा रहा हूँ । वहाँ पहुँच कर ही । पानी पिऊ गा । तुम्हारी जब इच्छा हो आते रहना । उन्होंने मुझे लाख समझाया किन्तु मैंने एक न मानी ।

विश्व बापू

हमारी बातें हो ही रहीं थीं कि यकायक 'श्री देवीदास गाँधी' आये और बोले—विकल जी कल ठीक दस बजे बापू ने आपको बुलाया है। बिना ही ! मिले न चले जाना। पं० रामप्रताप जी यह ज़िम्मेदारी आपके ऊपर है। ऐसा कह कर वह चले गये। उस समय रात के दो बजे थे। 'बापू' ने अपने आप ही मुझे बुलाया है ! क्या उन्होंने यहीं बैठे हुये मेरा पत्र पढ़ लिया और मेरे मन की सभी बातें जानली हैं। अब मेरे हृदय में थोड़ा सा भय था, पश्चाताप था, और थी बापू के प्रति असीम श्रद्धा।

तब मेरे मित्र ने मुझ से कहा कि उठो ! अब तो भोजन कर लो ! देखा महात्मा का चमत्कार ! वह तुम्हारे हृदय की सब बात जान गये हैं। मैंने भोजन किया और पैर फैलाकर लेट गया पलङ्ग पर। किन्तु अब हर्ष के मारे नींद न आई।

सुबह को ठीक समय पर हम 'सेवा ग्राम' आगये। बापू ने मुझे बुलाया, मैं उनको नमस्कार करके उनकी आज्ञा से उनके सामने ही बैठ गया। तब उन्होंने चीनी मिट्टी का बना हुआ एक खिलौना दिखलाकर मुझसे कहा।

'क्या तुम इन्हें पहचानते हो।'

'नहीं महाराज ! मैं तो नहीं जानता।'

'देखो इस खिलौने में 'तीन बन्दर' हैं। जो मेरे गुरू हैं। इनका उपदेश हर समय मेरे हृदय में रहता है।'

पहिले गुरू आँखें बन्द किये हैं—मत देखो ! दुनिया की गन्दी और बुरी चीजों को।

दूसरे गुरू कान बन्द किये हैं—मत सुनो ! अपनी बड़ाई और दूसरे की बुराई।

तीसरे गुरू मुंह बन्द किये हैं—मौन रहो ! और बुरा मत बोलो ! उतना ही बोलो जितनी आवश्यकता हो।

सो तुमने मेरे दूसरे गुरू के विरुद्ध काम किया है।

'महाराज अपराध क्षमा करिये। मैंने तो अपनी श्रद्धा और भक्ति अनुसार ही यह काम किया है।'

'ठीक बात है! तुम्हारा कुछ भी अपराध नहीं। क्योंकि किसी अच्छे काम करने वाले आदमीका गुण गान करना कोई बुरा काम नहीं है। लेकिन मैंने जो कुछ तुमसे कल कहा था वह भी ठीक ही था। तुम्हारी कविता सुन कर। दु ख तो मुझे इसलिये हुआ कि - मेरे जीवन की बीती हुई कुछ दुखद घटनायें मेरे सामने आगई थीं और घृणा इसलिये हुई कि—तुम मेरी'बड़ाई'मुझे ही सुना रहे हो। मैं अपनी बडाई को सुनकर और कह भी क्या सकता था। अच्छा अब यह तो बतलाओ कि—तुमको मुझे कविता सुनाने से क्या ? लाभ हुआ।'

'महाराज! मेरी आत्मा को शान्ति मिली। और मैंने अपना अहोभाग्य समझा। मैं तो घर से। इसी अभिलाषा को लेकर चला था। सो मेरी इच्छा पूरी होगई और लाभ तो—इतना अधिक हुआ कि जिसके होने की मुझे तो स्वप्न में भी आशा नहीं थी। आपने जो मुझे गुरू मत्र देकर तीन बातें बतलाई हैं। उनको मैं जीवन भर याद रखू गा।

'वडी अच्छी बात है, अच्छा और क्या लाभ हुआ।'

'जब इस किताब में यह बातें—जो आपकी और मेरी हो रही हैं। प्रकाशित होंगी—तो यह पुस्तक खूब बिकेगी। और यही वह मुझसे कहलाना भी चाहते थे।

बापू खिलखिला कर हस पड़े और बोले अच्छा और कोइ कविता सुनाओगे क्या ?

विश्व बापू

तव मैंने 'वधशाला' सुनाई और लगातार सुनाता रहा। कविता समाप्त होने पर बापू बोले—

'अगर तुम बुरा न मानो तो कहूं। 'इस कविता में विचार तो अच्छे हैं। लेकिन नाम अच्छा नहीं।'

फिर बापू ने मुझसे मेरी कुछ घरेलू बातें पूछीं मैं सभी कुछ निसकोच बतलाता रहा।

इतने ही में 'ठक्कर बाबा' आगये और समय भी पूरा हो चुका था। मैंबापू को मस्तक झुका कर वहाँ से चला आया।

मैं जब तक 'सेवा ग्राम' में रहा तब तक नित्य ही बापू की 'प्रार्थना सभा' में शामिल होता और सध्या के समय उनके साथ टहलने जाता। मेरी यही इच्छा बनी रहती थी कि अपना अधिक से अधिक समय बापू के आस पास ही विताऊँ। आफिस क बाहर ही। कुछ दूरी पर एक ओर को बैठा रहता था और देखता रहता था कि कौन मिलने आया तथा कैसी २ बातें हुई।

ऐसी दो चार घटनाएँ जो किसी भी सहृदय व्यक्ति के हृदय पर, अपना प्रभाव डाले विना नहीं रह सकतीं। उनको यहाँ लिख देना मेरे विचार से तो कोई असंगत न होगा।

एक दिन की बात है कि—उसी ओर का एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी जिसने कई अंग्रेज अफसरों का अगस्त क्रांति मे खून किया था और जिसके पकड़ने के लिए बृट्रिस सरकार ने एक बड़े इनाम की घोषणा कर रक्खी थी बापू से मिलने आया।

बापू ज्यों ही स्नान गृह से बाहर आये! त्यों ही वह अपनी बनावटी सूरत और पोशाक दूर करके अपने 'असली रूप' मे बापू के सामने हाथ जोड़ कर। खड़ा हो गया। बापू उसे दे कर खूब हंसे और बोले—'अब तुम गिरफ्तार हो जाओ! बोलो क्या राजी है! करूँ पुलिस को फोन।'

विश्व बापू

'महाराज जैसी आपकी आज्ञा। मुझे सभी कुछ स्वीकार है।'

बापू ने फौरन वर्धा पुलिस को फोन कर दिया—

'आपके एक बहुत बडे महमान आश्रम में आये हुए हैं। उन्हे लिवा कर ले जाइये।'

वर्धा से पुलिस के अफिसर आये। तब बापू ने उस क्रांतिकारी को अच्छी प्रकार। भोजन करा कर उसके गले में सूत की माला डाली और फिर अपने हाथ से उसके माथे पर तिलक करके उसे कार में बिठा दिया। तब उससे हसते हुए बापू बोले। 'कहो कुछ दुख तो नहीं हुआ।'

'दुख तो महाराज। हम से कोसों दूर रहता है। और इस समय तो यदि मेरे सीने पर गोली भी मार दी जाय। तब भी आनन्द है।' कार चली गई और हम सब बापू के पीछे ही पीछे आश्रम मे चले आये। ऐसे थे वह प्रभाव शाली।

परचुरे शास्त्री की झोंपडी सेवा ग्राम से काफी दूर थी। बापू उनकी सेवा करने जाया करते थे। कोढ़ हो जाने क कारण परचुरे शास्त्री के हाथ पैर गलने लगे थे। एक दिन मैं भी बापू के पीछे पीछे वहाँ चला गया। बापू ने उनके वह घाव—(जिनको देखकर साधारण आदमी के हृदय मे घृणा होना स्वाभाविक भी बात थी) बड़े ही। प्रेम से धोये और दवा भी लगाई। बापू घाव धोते जाते थे और उनसे हसी की बात करते जाते थे। ऐसे थे वह सच्चे सेवक।

एक दिन किसी आदमी ने बापू से आकर कहा कि—आज आपके पास मिलने के लिये एक आदमी आयेगा और उसने यह अनर्थ किया है। वह इस बात को, आप से छिपायेगा तथा सब कुछ झूठ ही। बोलेगा।

कुछ देर के बाद वह आदमी जिसके बारे में ऊपर लिखो बात हुई थी—बापू के पास आया और बात चीत करने लगा। बातों ही बातों में बापू ने उससे कहा कि—तुमने यह काम भी तो किया है।

'नहीं महाराज ! मैंने नहीं किया' उसने बड़ी दृढ़ता से कहा। बापू चुप हो गये और थोड़ी देर बाद बोले !

'देखो भाई यह आदमी की कमजोरी है कि— एक झूंठ को छिपाने के लिए ! हजार झूंठ बोलता है। गलती हो जाना बुरी बात नहीं है ! भूल से हो गई। लेकिन की हुई गलती को जान बूझकर छिपाना अच्छी बात नहीं होती।

'तो क्या मैं झूंठ बोलता हूँ ! आपको मेरा विश्वास नहीं।'

बापू का चेहरा एक दम तमतमा उठा और उन्होंने अपने सीधे हाथ से, अपने मुँह पर, इस जोर का चपत मारा कि उङ्गली के निशान उपड़ आये। फिर वह धीरे से बोल उठे।

'इसमें तुम्हारा कुछ भी दोप नहीं है ! मेरे ही अन्दर कोई ऐसी कमी है कि—जो तुम मेरे सामने झूंठ बोल रहे हो। और बापू उठ कर चल दिये।

बहुत से आदमी बाहर खड़े हुए यह सब कुछ देख रहे थे। उस आदमी से अब न रहा गया और वह फूट फूट कर रोने लगा। मैं पापी हूं ! दुष्ट हूं ! नीच हू ! झूंठा हूं। मैने आपके सामने झूंठ बोला ! मेरा अपराध क्षमा करो ! महाराज मेरा अपराध क्षमा करो। और वह बापू के चरणों पर लोट गया।

तबबापू ने उसे उठा कर ! अपने हृदय से लगाया। फिर उसने वह गलती और उसके अतिरिक्त न बतलाने योग्य

बहुत सी बातें ! सभी कुछ बापू के सामने स्पष्ट रख दिया। ऐसे थे वह सत्य के भक्त।

सन्ध्या के समय टहलने को जाते हुए बापू के साथ पन्द्रह बीस बच्चे, स्त्री, पुरुष, जरूर होते ही थे। चाल उनकी इतनी तेज होती थी कि कभी कभी तो मुझे भी भागना ही पडता था। एक दिन की बात है कि—एक पाँच या छ वर्ष का लडका—(जिसकी मा भी बापूके साथ टहलने गईथी।) लौटते समय वह थक गया और रोने लगा। बापू ने उसे प्यार किया तथा अपनी लाठी का एक सिरा उसको पकड़ा कर बोले 'अच्छा चलो तो सही! देखें कौन आगे निकले।' लड़के को पीछे करके और आप आगे होकर बापू! धीरे धीरे चलने लगे। कुछ देर तक वह बच्चा सहमा हुआ धीरे धीरे चलता रहा, फिर यकायक लाठी का वही सिरा प-डे हुये बापू के आगे होकर इतनी जोर से भागा कि—बापू को भी लाठी का दूसरा सिरा पकडे हुए उसके पीछे ही पीछे भागना पडा और हम सब भी भाग पडे। बच्चा आश्रम तक भागता और हसता ही चला आया। ऐसे थे वह बाल विनोदी! हस मुख बापू।

बापू जब कभी सेवा-ग्राम से बाहर जाते थे या बाहर से आते थे तो स्वर्गीय सेठ जमुनालाल बजाज की माता के पास जरूर होकर जाते थे। एक दिन गौ 'सेवा सघ' को देखने के लिए बापू 'बजाज वाड़ी' मे गये। उन्होंने कई गायों के गले में फूल माला डालीं और उनको अपने हाथ से गुड खिलाया।

स्वर्गीय बजाज जी की माता उन दिनों कुछ अस्वस्थ थीं। उनकी खाट भूल मे पडी थी और वह उस पर बैठी तथा लेटी हुई भूलती ही रहती थीं। मैंने भी उनके दर्शन किये और अपना

सिर उनके चरणों मे रख दिया। यकायक बजाज जी की ! स्मृति आते ही मेरा हृदय भर आया और आगये आखों मे आंसू।

स्वर्गीय बजाज जी के दर्शन मैंने अनेकों बार 'वनस्थली' में किये थे और उनके 'उपदेश' भी सुने थे। कोई कुछ भी कहो ! किन्तु मैं नि.संकोच कह सकता हूं ! कि 'वनस्थली विद्यापीठ' महान कर्मठ तथा हठयोगी श्री पं०—हीरालाल जी शास्त्री की तपस्या तथा स्वर्गीय श्री सेठ जमुना लाल जी बजाज के ही त्याग का फल है। भले ही ! वह आज कुछ भी हो,और कैसा ही हो। उसकी मुझे यहां कुछ आलोचना तो करनी ही नहीं हैं। क्योंकि इस विषय में 'वनस्थली' पुस्तक में आजकल लिख ही रहा हूं।

ऐसी ही ! बहुत सी घटनायें आज भी मेरी आँखों में घूम रही हैं। क्या ही वह दिन थे। सेवाग्राम से आने को जी चाहता ही ! नहीं था। किन्तु मेरी परिस्थिति ऐसी नहीं थी कि—जो मैं अपने परिवार की ओर से निश्चिन्त हो बैठा रहता। अन्त को मजबूर होकर मैं वहाँ से चल दिया और मथुरा तथा देहली होता हुआ अपने घर आगया।

फिर समय समय पर अनेकों बार देहली में बापू के दर्शन किये और प्रवचन भी सुने। वर्षों बीत गये ! भारत के टुकड़े हुये और आजादी भी मिली। किन्तु कितनी महगी मिली इसे हर कोई जानता है। हिन्दू मुसलिम झगड़े हो ही रहे थे, तथा आशका बनी हुई थी। उन्हीं दिनों मुझे एक जरूरी काम से 'सम्भल' जाना पड़ा।

'सम्भल' जिले मुरादाबाद में हिन्दुओं का अति प्राचीन तीर्थ स्थान है। यहीं पर पुराणानुसार 'हर जी हर' मन्दिर में (जो आजकल मसजिद है) कलयुगी अवतार होने की बात भी कही

जाती है। इसी सम्भल से आठ मील की दूरी पर 'भूड़ा-बेगमपुर' एक गाव है। जो मेरी स्वर्गीय माता'कौशल्या'की जन्म भूमि है।

मैं उसी गाव में गया था। जब वहा से वापिस आने लगा तो सम्भल तक पैदल ही आना था। क्योंकि रेलगाड़ी यहीं से मिलती है। मैं चल पडा लगभग ६ मील चला आया। रास्ते में एक आदमी मिला मैंने उससे पूछा कहो भाई कोई नई बात।

'भैय्या सारा बाजार बन्द पड़ा है। मैं तो वहां से उल्टा ही भाग आया। ऐसा मालूम होता है कि झगड़ा फिर हो गया। ऐसा कहकर वह चला गया और मैं आगे ही बढ़ता रहा। किन्तु चित्त मे कुछभय अवश्य हो गया। फिर भी सोच लिया था कि शहर मे जाकर क्या करू गा! सीधा स्टेशन पर ही चला जाऊगा।

थोडी देर पश्चात् सम्भल ही की ओर से आता हुआ एक और आदमी मिला। मैंने उससे भी पूँछा।

'कहो भाई! क्या हाल है। क्या फिर झगडा होगया।'

'झगडे-चगडे का तो मुझे कुछ पता नहीं! पर'गाँधी' मर गया।'

मेरी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया। पैर भी न टिक सके वहीं। रास्ते ही मे बैठ गया और बहुत देर तक बैठा रहा।

बापू मर गये। कैसे मरे। किसी ने मार दिया। इन विचारों को लिये हुये मैं भाग पड़ा और आगया कुछ देर बाद'सम्भल'मे।

सारा बाजार बद था, क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी दुखी थे और निकल रही थी! बापू की अर्थी। जब वह जलूस 'वंस गोपाल' पर जाकर समाप्त होगया। तो मैं भी स्टेशन पर आगया और निकल पड़ी मेरे मुख से सबसे पहली ये लाइन।

'राष्ट्रगगन का विशुद्ध प्रकाश, कहाँ अकलङ्क मयङ्क चलागया।' और फिर नित्यही बापू के विषयमे कुछ न कुछ लिखता ही रहा।

इस पुस्तक का प्रथम सस्करण 'राष्ट्रमाता कस्तूर बा' के नाम से प्रकाशित हो ही चुका था। अब जो कुछ 'बापू' के विषय मे लिखा है। उसे भी इसी पुस्तक में सम्मिलित करके अब इस पुस्तक का नाम 'विश्व बापू' ही रख दिया है।

आज बापू ससार में नहीं हैं। किन्तु उन्होंने 'मुझे जो कुछ दिया है' वह मेरे हृदय में है। उसी के फल स्वरूप मैं। सदैव इस बात का, ध्यान रखता हूँ। कि 'मेरी ओर से किसी को भी किसी प्रकार से कष्ट न पहुँचे। लेकिन 'अनीति' किसी भी अवस्था में सहन नहीं कर सकता।

तभी तो आज मुझे—कोई 'दम्भी' समझता है, कोई 'पाखडी'। कोई 'क्रोधी' कोई 'निकम्मा' और न जाने क्या क्या। किन्तु मुझे इससे क्या ? शुभ कर्म का फल सदैव शुभ है। जो शुभ है। वही शिव है ! और जो शिव है वही सत्य है। बस इसी 'विश्वास' को लिये हुये मैं अनेकों आपदायें सहता हुआ अपने उद्देश्य की ओर बढ़ता रहा हूँ ! बढ़ रहा हू। और बढ़ता रहूंगा। भूमिका समाप्त हुई। केवल एक ही ! वाक्य बापू को और समर्पण है।

'कारागार की अंधेरी और छोटी कोठरी में भयकर निशा के वक्षस्थल पर ताण्डव नृत्य करने वाले रुद्र। ऊँची ऊँची पत्थर की विशाल 'चहार दीवारी' से घिरी हुई, लोहे की चमचमाती हुई प्रौढ़ शलाकाओं के बीच, गले से तौक हाथों में हथकड़ी पैरों मे बेड़ी पहिने हुए भी, एक जगह न ठहरकर लाल लाल आँखों से अगारे बरसा, भीषण दहाड़ के साथ चक्कर काटने वाले शेर।

विश्व बापू

अपनी अभिलाषाओं की गर्दन मसोस कर। मस्ती और कसक से इठलाते हुये तसले पर 'इन्किलाब जिन्दाबाद' का प्रयलकर गान गाने वाले राष्ट्रीय गायक! पशुवत् व्यवहार को भी शांति के साथ नीची निगाह किये हुए। सहन शीलता की सीमा से दो हाथ आगे जाकर सहन करने वाले सहन शील।

दूसरों की सेवा में अपने को खपा डालने वाले। स्वार्थपरता से रहित निस्वार्थ सेवी। सुख को दोनों पैरों की ठोकर से ठुकरा कर, दुख को हसते हुये असीम आनन्द के साथ गले से लगाने वाले देवता। कलेजे मे एक आह! के साथ आग लगा देने वाली चाह को लिए हुये, पत्थर को चूर चूर कर देने वाली अहिंसा के उपासक। भूले भटकों तथा अन्धो की आँखे खोजकर सत्य के प्रकाश मे, सत्य मार्ग बतलाने वाले सत पथ प्रदर्शक।

सर्दी, गर्मी, वर्षा, आंधी, भूख, प्यास, सुख, दुख और किसी भी प्रकार की, आपदाओं की चिन्ता न करके, गर्व के साथ सिर को ऊँचा उठाकर दुनिया को देखने वाले अचल हिमालय।

माता, पिता, भाई, बन्धु, बहिन, स्त्री, पुत्र इत्यादि सगे साथियों और कुटुम्बियों के मोह को छोड़ देने वाले निर्मोही।

शत्रु, मित्र, छूत, अछूत, जाति-पाति के भेद को त्याग कर, जो भी सामने आजाय उसी के चरणों मे प्रेम से अपना सर रख देने वाले आदर्श प्रेमी-पीटर। पीर। प्रताप।

काम क्रोध लोभ मोह अहकार आदि दुर्गुणों का खून करके उसी रंग में दिल को रगकर इन्द्रिय सयम करने वाले सन्यासी!

तेग तबर तलवार तमचा, गोली, छुरी, बर्छी कटारी भाला इत्यादि सभी शस्त्रो और अस्त्रों से न डर कर न्याय के हित जालिम के आगे दर्प से सीना ताने खड़े रहने वाले स्वाभिमानी।

विश्व बापू

अत्याचार होते हुये देख कर, अपने जले दिल की राख में छिपी 'क्रांति की चिन्गारी' को हवा लग जाने के कारण, उठते हुये धुंआंधार से! विश्वको खाक न बना, शांति, प्रेम, दया से बनी 'त्रिवेणी' मे स्नान करने वाले ठंडे ज्वालामुखी!

किसी दीन की दयनीय दशा को अश्रुधार के भवर मे पड़ चक्कर काटते, हाथ पैर पीटते, छटपटाते तथा बेदम को दम-दिलासे द्वारा उछल २ कर डूबने से बचाने वाले सफल तैराक!

भूखे की पुकार को सुन! अपने शरीर के समस्त रक्त को आहों से उड़ा, पुतलियों की काली घटा में छिपा, कड़क और गडगड़ाहट के साथ, छप छपाते पलकों से कभी कभी चपला को चमकने का मौका देते हुये, एक एक बिन्दु का कण-कण बिखेर, मूसलाधार तथा गठरी बाध कर बरसने वाले जलधर!

अपनी आन और बान के हित शरीर के टुकड़े टुकड़े भी कराकर याचक को निराश न होने देने वाले महादानी शिवि!

अपने शत्रु के लिये भी मन वचन कर्म अर्थात् किसी प्रकार से भी अहित न करके इस उच्च आदर्श को सामने रख 'संसार को अहिंसा परमोधर्म.' का पाठ पढ़ाने वाले पाठक!

घर मे सड़ सड़ कर! मरने की अपेक्षा, अपने देश की स्वतन्त्रता के लिये 'शम-ए आजादी' का पर-वाना बन, तिल २ करके मर मिटने की अभिलाषा रखने वाले! ऐसे अनेक 'अमर शहीदों' को बलि-वेदीके द्वार तक पहुंचाने वाले विश्वकी विभूति बापू! तेरे चरणों में कौन गर्व के साथ नत-मस्तक न होगा। तूने! 'जिसकी समाधि पर लिखा राम, होगया तत्व का पूर्णबोध। बापू! उस बा! की सुखद स्मृति के सुमन समर्पित सानुरोध॥'

रज-कण—'विकल'

भारती-वंदना

(१)

मम हंस पै हंस विराजनी राज,अरी रसना रस घोलती आ।
उर ज्ञानका दीप जला करके, अज्ञानके बन्धन खोलती आ।।
अक्षय भण्डार भरा हुआ है,शुभ वर्ण सुवर्ण से तोलती आ।
कविता सुरसरितासी बहे माँ,मैं-लिखता-चलूं तू बोलती आ।।
बलिदानकी भावना जाग उठे,झंकार वही,झंकारती आओ।
पग धारती आओ स्वतन्त्रतासी, मां भारती भार उतारतीआ।।

(२)

धनहै कहाँ माँ ?धनहीन हुये,वैभव तो कभीका फुकाहुआ है।
बल है कहाँ माँ बल हीन हुये, वीरत्व का रक्त रुका हुआ है।।
मुंह खोलनाभी अभिशाप हुआ,अधिकारका ताला ठुकाहुआहै
जिसको ये विश्वनिहारता था,वो भालविशाल झुकाहुआहै।।
विद्या धन औ बलबुद्धिसे अब,सब भाँति स्वदेशसुधारती आ।
पग धारती आओ स्वतन्त्रतासी,मांभारती भार उतारती आ।।

(३)

शुभजीवन दायनी जीवन दो,मम जीवन पूर्ण सफलही रहे।
तुमरे करकंजका शीशपै मां,नित शोभित छत्रअटल हीरहे।।
हिन्दी हिन्दू हित हिन्दको आग,लगी उरमें प्रतिपल ही रहे।
रखजैसा तुझे अच्छा लगेमाँ,है तेरा'विकल'अविकल हीरहे।।
कविताकी पताका गहाकरमे,मम काव्य कला विस्तारती आ।
पग धरती आओ स्वतन्त्रतासी,माँ भारती भार उतारती आ।।

[बीम]

विश्व बापू

ज्यति जय हे ! जन्म भू मां भारती ।
क्यों न हम तेरी, उतारैं आरती ॥
धूल में खेले 'सुधा' सम जल पिया ।
अन्त तेरे ने हृदय, निर्मल किया ॥
तुने पाला है, तभी तो हम पले ।
मां ! तुम्हारे हैं, बुरे हैं या भले ॥
तू हमारी ! और हम तेरे सभी ।
फिर तुम्हें चित से, भुलाये क्यों कभी ।
माँ ! तुम्हारी नित्य, हम सेवा करैं ।
भारती के हित, जिये चाहे मरैं ॥
धान्य विद्या ज्ञान का उत्कर्ष था ॥
विश्व का सिर मौर भारत वर्ष था
सम्पदा त्रैलोक्य की, सब थी यहाँ ॥
और बहती दूध की नदियां कहाँ ।
कर्म वीरों का, यथोचित कर्म था ।
विश्व में आदर्श, मानव धर्म था ॥

विश्व बापू

सर्व सुख भरपूर था, सुखधाम का ।
राज था 'आदर्श' राजा 'राम' का ॥
खूब 'मर्यादा' निभाई राम ने ।
बांसुरी 'अपनी' बजाई 'श्याम' ने ॥
वह यहीं ! कुरुक्षेत्र का मैदान है ।
रम रहा रज में 'सुगीता' ज्ञान है ॥
वीर थे अभिमन्यु अर्जुन 'भीम' से ।
ब्रह्मचारी थे 'पितामह' भीष्म से ॥
नृप दधिचि शिवि, महा दानी हुए ।
व्यास 'श्री शुकदेव' से, ज्ञानी हुए ॥
फिर हसी ! ही में 'महाभारत' हुआ ।
न संभल पाया, सभी गारत हुआ ॥
नष्ट सारी होगयीं । थीं शक्तियाँ ।
शेष जिनकी हैं, अभी तक उक्तियाँ ॥
था नमूना 'बुद्ध' ही ! वैराग्य का ।
गा रहा यश विश्व जिसके त्याग का ॥
सामने कब 'दाण्डयायन' के रुका ।
औ 'सिकंदर' का यहीं पर सिर झुका ॥
देश को 'चाणक्य' पर अभिमान था ।
पूर्ण 'हठयोगी' महा ! विद्वान था ॥

'शब्दभेदी' बांण, 'पृथ्वीराज' का ।
क्या करै विज्ञान, बोलो ! आज का ॥
फेर में फिर 'फूट' के हम पड़ गये ।
पैर 'यवनों' के, तभी तो गड़ गये ॥
राजपूतों की प्रबल, थी वीरता ।
औ ! महाराणा, शिवा की धीरता ॥
आगया 'शाहेजहाँ' भी शान में ।
जम गये ! अंग्रेज, हिन्दुस्तान में ॥
हाय 'गोरों' ने, चली यह चाल थी ।
हम 'गुलामों' के, गुलामी माल थी ॥
स्वप्न में भी हो न पाये, हा ! सुखी ।
हर तरह से ! हो गया, भारत दुखी ॥
जल रहे थे, दासता की आग में ।
मर गये 'जलियान' वाले बाग में ॥
शस्त्र तब ! कर में, अहिंसा का गहा ।
औ ! किया संघर्ष 'बापू' ने महा ॥
देश के हित ! नित्य, मरते ही रहे ।
नवयुवक बलिदान, करते ही रहे ॥
हा ! 'भगतसिंह' वीर के टुकड़े किये ।
याद है ! जो फैंक, सतलज में दिये ॥

विश्व बापू

पूर्ण 'सत्याग्रह' अतुल, बलवान था।
देख 'पशुबल' भी, उसे हैरान था॥
जब नहीं 'विश्वास' गोरों पर रहा।
तब यकायक 'विश्व बापू' ने कहा॥
हिन्द वालो! जाग जाओ मत डरो।
हिन्द के हित कुछ करो या अब मरो॥
सह चुके! हम, और सह सकते नहीं।
हिन्द में! अंग्रेज रह, सकते नहीं॥
छोड़ कर भारत, कहीं जायें चले।
बस! इसी में दिन, तुम्हारे हैं भले॥
क्रान्ति की तब हर, जगह ज्वाला जगी।
दासता रख पैर, सिर पर थी भगी॥
कह रही थी! यह, सभी की आत्मा।
है ब्रिटिश 'सरकार' का अब खात्मा॥
वृद्ध, बालक, नवयुवक सब उठ खड़े।
'गोलियाँ' खाते रहे, आगे बढ़े॥
क्या? नहीं फिर, जुल्म हत्यारे किये।
देश के 'नेता' पकड़ सारे लिये॥
और 'बापू' को! बिठा कर कार में।
ले गये! अंग्रेज, 'कारागार' में॥

विश्व बापू

(१)

रुकी कार, तब बापू उतरे, देसाई कंधे कर धार।
आगा खां के रङ्ग महल की, कांप उठी थर थर दीवार॥
भीतर पहुंचे सब कुछ देखा, कौन वहां आराम न था।
कोना कोना खोजा लेकिन, आज़ादी का नाम न था॥

(२)

लगे सोचने फिर भविष्य को, गई द्वार की ओर निगाह।
देखा बा! आरही वेग से, उर में लिये अमित उत्साह॥
बापू बोले कहो अरे बा! केसे तुम आ गईं यहां।
मै कैसे रहती रघुवर बिन, जहां राम! है सिया वहाँ॥

(३)

बा! दोनों के बीच बैठकर, झुका शीश कर रहीं विचार।
जीव ब्रह्म के मध्य रही थी, माया मानों विश्व निहार॥
सभी सुखों का मोह त्याग कर, क्या बैठी है पतिव्रता।
राम लखण सग पञ्चवटी में, क्या शोभित है जनक सुता॥

(४)

वनवासी को राजमहल में, मिला कहां पल भर आराम।
काट रहे थे दुखमय जीवन,करते क्या जब विधि हो बाम॥
समय निर्दयी को इतने पर, भी पूरा संतोष न था।
उसका कठिन विधान महा है, और किसी का दोप न था॥

(५)

एक बार हो गये अचानक, देसाई ऐसे बीमार।
उठे नहीं फिर! किया गया था, कितना ही उनका उपचार॥
सबही चिन्तित हुए नाथ! यह कैसा दारुण दुःख दिया।
करुणाकर क्या आज आपका, पत्थर का हो गया हिया॥

(६)

बापू औ बा! दोनों रहते नित उनकी सेवा में लीन।
प्रभु से भिक्षा! रहे मांग, है देसाई तेरे आधीन॥
दीनबन्धु कर दया दीन पर, अभी न इसका प्राण हरो।
करदो जीवन दान महा प्रभु, सब विधि से कल्याण करो॥

(७)

बदल गई तासीर दवा की, ऐसा था विध का संयोग।
दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता ही जाता था रोग॥
अपने उर में लिये एक-अभिलाषा हाथ पसार चला।
बूढ़े भारत की नौका को, छोड़ शोक! मझधार चला॥

(८)

ऊँचे स्वर से एक बार फिर, ओ३म् मन्त्र करके उच्चार।
प्राण पखेरू उड़ा बसाने, और कहीं अपना संसार॥
निराकार होगये छोड़, अपना शरीर साकार गये।
बापू! लखते रहे और, देसाई स्वर्ग सिधार गये॥

(९)

देसाई हा ! देसाई, यह मन्त्र गया कण कण गुन्जार ।
उठा एक दम बापू के उर, ऐसा भीषण भाटा ज्वार ॥
कब तक रोके रहे रुकें, क्यों, रुकने वाले मचल पड़े ।
हृदय उमडने से पहिले ही, नैन विचारे उबल पड़े ॥

(१०)

मुझे याद है जब तू मिलने, आया मुझ से पहली बार ।
निरख लिया था क्षण भर ही में, मैंने तेरा प्रेम अपार ॥
तूने मेरी बात मान ली, मैं भी तेरी मान गया ।
तूने मुझको जान लिया था, मैं तुझको पहिचान गया ॥

(११)

वशीभूत हो गये परस्पर, बहा प्रेम का श्रोत महान् ।
और भारती की वीणा पर ! गाने लगे एक ही गान ॥
फिर खुलकर दो हृदय मिले थे, रह न गई कुछभी मनमे ।
तुझ में मैं और मुझमें तू , हों एक प्राण ज्यों दो तनमें ॥

(१२)

जब जब मैं दुविधा में पडता, मुझे सहारा देता कौन ।
उर की बात जान लेता था, यद्यपि मैं रहता था मौन ॥
मेरा मन्त्री मेरा नौकर, तूने सब कुछ काम किया ।
जैसे भी हो सका सदा, तूने मुझको आराम दिया ॥

(१३)

तुझे नहीं थी धनकी चिन्ता, तुझे नथा निज तनका ध्यान ।
अपनी विद्या औ प्रतिभा पर,कभी न कर पाया अभिमान ॥
स्वार्थ रहित निस्वार्थ भाव से, सेवा में नित लीन रहा ।
तू मेरे आधीन नहीं था, मैं तेरे आधीन रहा ॥

(१४)

तू मेरी माता के सम था, माता का वह प्यार गया ।
तू मेरा आदर्श पिता था, हाय ! पूर्ण अधिकार गया ॥
तू मेरा सच्चा सेवक था, तू मेरा स्वामी सुखधाम ।
मैं तेरा आराध्य और था, तू मेरा आराध्य ललाम ॥

(१५)

तू मेरा नन्हा बच्चा था, मुझे रिझाता था दिन रात ।
तू मेरा सच्चा पाठक था, मुझे पढ़ाता था दिन रात ॥
बड़े भ्रात के सम तू मुझको, सदा सहारा था देता ॥
जो कुछ भी जी में आता था, तुझ से सब कुछ कहलेता ॥

(१६)

आज बोल ! यह क्या करता है, कहां गया वह तेरा प्यार ।
अरे निर्दयी आंख खोल ! मैं कबसे तुझको रहानिहार ॥
रहा सदा उरका उदार, क्यों बोल आज मुंह मोडचला ।
महादेव ! हा महादेव ! तू मुझे अकेला छोड़ चला ॥

विश्व बापू

(१)

फिर कुछ ही दिन के पश्चात, और हुआ उर पर आघात।
झुकी न जब भारत सरकार, तब बापू अनशन व्रत धार।
शान्ति मौन में रही विराज, खेल रही बापू से आज।
अमर साधना क्या साकार, बना रही थी नव संसार।

(२)

बीत गई जब आधी रात, रही सोच कस्तूरा मात।
और नहीं था कोई पास, केवल प्रभु ही का विश्वास।
करै प्रार्थना! बारम्बार, बच जाये मम प्राणाधार।
यही रात अनशन की शेष, सकुशल होवै उदय दिनेश।

(३)

बापू थे 'बेसुध' बेचैन, देख उन्हें! भर आते नैन।
कभी कभी देते मुँह खोल, हा! देसाई इतना बोल।
देसाई के फूल निहार, अश्रु बिन्दु गिरते दो चार।
आंख बन्द हो जातीं आप, छिपा कोर में जिनकी ताप।

(४)

बा असीम दुख से भर पूर, आज नींद थी कोसों दूर।
निरख चन्द्र का मंदप्रकाश, तारों सहित दुखी आकाश।
सहमी कुछ हुई अधीर, धीरे धीरे चली समीर।
जग सोया था पैर पसार, पर बा को था जीवन भार।

(५)

कभी न आया उसको ध्यान, होताविधकाअटलविधान।
दुख अथाह ! या हर्ष अपार, कब निद्रा ने किया विचार।
वा भी हुई नींद में मग्न, लगी देखने तब यह स्वप्न।
गई सभी अपना दुख भूल, मानो दैव हुआ अनुकूल।

(६)

देखी दुखिया भारत मात, बंधन में जकड़ी अकुलात।
बापू खड़े झुकाये माथ, थी असंख्य जनता भी साथ।
बोले माता ! रख विश्वास, पूरी करें ! तुम्हारी आश।
अब वह समय नहीं है दूर, सब प्रकार हो सुख भरपूर।

(७)

बापू ने तब हाथ उठाय, कहा बढ़ो ! सब करो उपाय
सहसा बढ़े ! करोड़ों हाथ, किया मात ने ऊंचा माथ
लगे टूटने बंधन आप, रहा न किंचित भय संताप
क्या बालक क्या वृद्ध जवान, करते बापू का गुणगान

(८)

सत्याग्रही ! सत्य के सेवक, अमर सत्य अभिराम नमों
शान्तिअहिंसा दया क्षमाकी,जीवनज्योति ललाम नमो
कर्मवीर ! शुभ कर्म तुम्हारा, कर्म योग निष्काम नमों
दीन दुखीपीड़ित अनाथ के, हे सर्वस ! सुखधाम नमों।
सरल जटिल समविषम अलौकिक, बापूतेरा शुभजीवन
नमामि मोहन ! नमामि मोहन, जयमोहन जयजयमोहन

(९)

जिसको स्वसन्मान देश से, है किंचित भी प्यार नहीं।
पशु समान है उसे मनुज, कहलाने का अधिकार नहीं।
औ पाषाण समान हृदय यदि, उठते हो ! उद्गार नहीं।
वह भी क्या मानव है जिसके, होते शुद्ध विचार नहीं।
भेदभाव तज! सभी एक हैं,क्या हिन्दू मुसलिम हरिजन।
नमामि मोहन ! नमामि मोहन, जयमोहन जयजयमोहन।

(१०)

पशुबल के सन्मुख जब तेरी, असहयोग ललकार उठी।
नहीं अहिंसा हमने छोड़ी, करने प्रलय प्रहार उठी।
भारत मेरा भारत मेरा, जनता यहीं ! पुकार उठी।
विश्व भारती की तव वीणां, अकस्मात झंकार उठी
दिया दिव्यसन्देश देश के, अर्पण करदो तन मन धन।
नमामि मोहन ! नमामि मोहन, जयमोहन जय जयमोहन।

(११)

अरे करो या मरो लक्ष पर, उठो लगाये ध्यान चलो।
विगत शहीदों का साहस,औ लिये वही अरमान चलो।
दूर निराशा करो सुभट, बनकरआशा अभियान चलो।
जन्मभूमि के हित सहर्ष अब, करनेको बलिदान चलो।
'त्रिकल' देश के आज खोल दो, पराधीनता के बंधन।
नमामि मोहन ! नमामि मोहन,जय मोहन जय जय मोहन

(१२)

अभी नींद में थी बा मग्न, हुआ न पूरा उसका स्वप्न।
फिर अनेक देखे बलिदान, पशुबल अत्याचार महान।
गूँजा करो मरो का मंत्र, भारत अन्तिम हुआ स्वतंत्र।
जनता में था हर्ष अपार, अब होगी अपनी ! सरकार।

(१३)

किन्तु हुआ यह क्यातत्काल,लगी विषैलीज्वालकराल।
हिन्दू मुसलिम का प्रतिशोध, खूब परस्पर बढ़ा विरोध।
उसी आग में हाय ! ज्वलंत, बापू के जीवन का अन्त।
मचा भयानक हा हा कार, रुदन शोकअतिकरुणपुकार।

(१४)

सकी न बा कुछ और विलोक, खुलीआँखथाउरमेंशोक।
मैं क्या देख रही ! भगवान, दया करो हे ! दयानिधान।
बदले में लो मेरे प्राण, पर बापू का हो कल्याण।
सब कुछ प्रभु तेरे आधीन, मैं असहाय दुखी हूं दीन।

(१५)

अनशन बीता हुआ विहान, सब के उर आनन्द महान।
मानों हुई विनय स्वीकार, बापू सकुशल बा बीमार।
रोग रात दिन बढ़ता जाय, किये अनेकों गये उपाय।
बापू चिंतित हुए अधीर, बा का दुर्बल देख शरीर।

विश्व बापू

(१)

बा ! का शीश रखे जङ्घा पर, बैठा बापू देखा ।
मानों करता विगत स्मृति का, हृदय पटल पै लेखा ।।
बा ! अचेत थी उसे चेतना, नहीं किसी विधि आई ।
फिर भी बापू ! मिटा रहा था, बा ! मस्तक की रेखा ।।

(२)

बाल प्रभाकर सी बिन्दी को, जब इकबार निहारा ।
उसमें देखा लिखा हुआ है, श्रम सब व्यर्थ तुम्हारा ।।
होगा वही सोच फिर कैसा, जो कि राम रच राखा ।
विधि की इच्छा प्रबल न इनमें, चलै किसी का चारा ।।

(३)

मूल मन्त्र ! पढ़ कर बापू ने, अपनी दृष्टि जमाई ।
उस बिन्दी में क्षीर सिन्धु औ, रमा पड़ी दिखलाई ।।
नयन मूंदकर ध्यान लगाये, निज पति के चरणों का ।
जिसके आगे ! नाच रहे थे, नारायण ! सुखदाई ।।

(४)

उस बिन्दी में शैल शिखर पर, बैठी शैल कुमारी ।
घास पात को डाल उदर में, करै तपस्या भारी ।।
जाको जापर सत्य सनेहू, उसे वही मिलता है ।
खड़े हुये थे जिसके सन्मुख; कर बांधे त्रिपुरारी ।।

(५)

उस बिन्दी में लखी शारदा ! वीणा मधुर बजाती ।
नीरस उर में सुधा बिन्दु से; नव जीवन सरसाती ॥
जन्म भूमि की धर्म भूमि की; कर्म भूमि की जय हो ।
देश धर्म हित बलिदानों के; अमर तराने गाती ॥

(६)

उस बिन्दी में श्रद्धा देखी; आदि पुरुष की रानी ।
जिसके मन की बात ! न मनु के; सिवा किसी ने जानी ॥
मनु से श्रद्धा ! श्रद्धा से मनु; एक जीव दो तन में ।
शिव से शिवा रमेश रमा; ज्यों ब्रह्मा से ब्रह्मानी ॥

(७)

उस बिन्दी में लखी शव्या; नयनों से जल जाता ।
चली जलाने मृतक पुत्र को; लिये गोद में माता ॥
पहुंच गई शमशान ! जहां पर; खड़ा अटल सत वादी ।
मांग रहा कर ! निज नारी से; हरिश्चन्द्र सा दाता ॥

(८)

उस बिन्दी में थी पापाणी, गौतम ऋषि की नारी ।
महा श्राप को काट रही थी; प्रति पल दुखित बिचारी ॥
जान न पाई कुछ भी माया; अधम इन्द्र की भोली !
पग परसत ही रघुनन्दन के; निज पति भवन सिधारी ॥

(९)

उस बिन्दी में अग्नि परीक्षा; सीता की लख पाई।
अपलक देख रहे थे जिसको; लषण सहित रघुराई॥
सीता के सम! कौन सती है, हुई न आगे होगी।
जिसके यश की विजय पताका, त्रिभुवन में फहराई॥

(१०)

उस बिन्दी में ध्यान लगाये; लक्ष्मण बाल जती का।
था पति का प्रतिबिम्ब निरखना; साधन बुद्धि मती का॥
विरह आग में जिसके यौवन; की जलती नित होली।
कम किससे बलिदान रहा है; कब उर्मिला सती का॥

(११)

उस बिन्दी में लखी माण्डवी; भरत चरण की दासी।
पति के रहकर पास रही; पति प्रेम सुधा की प्यासी॥
वह रघुपति का ध्यान लगाये; वह पति ध्यान लगाये।
इन दोनों के सन्मुख क्या थे; राम सिया बनवासी॥

(१२)

उस बिन्दी के मध्य; सभा में! रोती द्रुपद दुलारी।
जिसको अपमानित करता था; दुशासन बलधारी॥
पांचों पति लख रहे पड़ा था; सबके मुंह पर ताला।
तब माया पति ने पहरादी; निज माया की सारी॥

(१३)

उस विन्दी में थी शकुन्तला; कण्व ऋषि की पाली ।
जिससे हा ! दुष्यन्त दुष्ट ने; अपनी आंख चुराली ॥
एक आश पर ! वह जीती थी; देख देख हर्षाती ।
सिंह शावकों के रद गिनता; भरत पुत्र बलशाली ॥

(१४)

उस विन्दी के मध्य; महल में यशोधरा थी रोती ।
छोड़ गया निर्मोही गौतम, राहुल के सङ्ग सोती ॥
गाड़ रही थी उर में आंखें, प्रेम पयोनिधि डूबी ।
प्रियतम के स्वागत को अगनित, मुक्ता माल पिरोती ॥

(१५)

उस विन्दी में हजरत के, संग चली फातिमा जाती ।
छाले फूट रहें थे ठोकर, थी पग-पग पर खाती ॥
मक्का छोड़ मदीना आई, पड़े जान के लाले ।
विपदा पर विपदायें अन्तिम, दम तक रही उठाती ॥

(१६]

उस विन्दी में दाहर की, सब कन्यायें रोती थीं ।
रोती थीं ! पर अमर कीर्ति से, अपना मुंह धोती थीं ॥
अरब-खलीफा एक न माना, खेल गईं बेचारी ।
मार कटारी एक दूसरे, के उरमें सोती थीं ॥

(१७)

उस बिन्दी में था मरियम का, मूंक हृदय अकुलाता।
जग सेवा का सुत फल पाये, देख रही थी माता॥
शीश मुकुट कांटों का शोभित, ठुकी देह पर कीलें।
ईसा का बलिदान विश्व के, उर पर छाप लगाता॥

(१८)

उस बिन्दी में थी सोलह, शृङ्गार किये वह बाला।
लख प्रतिबिम्ब हुआ खिजली का, दिल जिसपर मतवाला॥
सभी भांति चित्तौड़ नष्ट कर, राज सदन में देखा।
कूद रही थीं सुरबालायें, धधक रही थी ज्वाला॥

(१९)

उस बिन्दी में थी बीदर की, बेगम खड़ी अकेली।
मांग रही थी दुआ खुदा से, रख कर शीश हथेली॥
हुआ शेरखां ! चूर नशे में, छाती पर चढ़ बैठी।
गला काट कर उसका करती, रक्तपान अलबेली॥

(२०)

उस बिन्दी में था मीना, बाजार दृश्य दिखलाता।
जिसमें छलिया भेष बदल कर, फिरता रूप छिपाता॥
तान कटारी किरण कुमारी, चढ़ बैठी छाती पर।
जिसके पग पर लोट रहा था, भारत भाग्य विधाता॥

(२१)

उस विन्दी में घूम रही थी, वही चांद सुल्ताना।
अकबर के वैभवशाली ने, जिसका लोहा माना॥
जीते जी लेकिन मुराद की, ना मुराद वर आई।
सब कुछ देकर आजादी को, था उसने पहिचाना॥

(२२)

उस विन्दी में थी सारंधा, छत्रसाल की माता।
है जिसका बुन्देलखण्ड, अब भी गुण गौरव गाता॥
पति के उर में मार कटारी, पतिव्रता कहलाई।
उदाहरण जिसकी समता का, नहीं विश्व में पाता॥

(२३)

उस विन्दी में थी दारा की, दारा मुसलिम वाला।
जिसने पेश किया औरंग को, तोहफा एक निराला॥
जुल्फों में दिल उलझा जालिम, ले यह जुल्फें मेरी।
और रक्त से रुखसारों के, भरा लबालब प्याला॥

(२४)

उस विन्दी में आजादी की, पीकर अगनित प्याली।
तलवारों पर नाच रही थी, वह बल वैभव शाली॥
बूढ़े भारत की ! आंखों में, है जिसकी परिभाषा।
दिखा गई अंतिम रण कौशल, रानी झांसी वाली॥

(२५)

उस बिंदी में अवध वेग में, पीट रही थी छाती।
माता के सन्मुख हा ! सुत की, गर्दन काटी जाती॥
सरयू और गौमती से तुम, आंखों देखी पूछो।
नर पिशाच ! पाषाण हृदय में, दया कहां से आती॥

(२६)

उस बिंदी में मां स्वरूप-रानी का मुंह लख पाया।
आनंद भवन जवाहर मोती, भारत भेट चढ़ाया॥
शीश फटा ! गिर पड़ी सडक पर, खा लाठी की चोटें।
जिसने आजादी की जड़ में, अपना रक्त बहाया॥

(२७)

उस बिंदी में अली-बंधु की, दिखलाई दी माता।
विजयी विश्व तिरङ्गा जिसके, कर में था फहराता॥
अरे ! खुदा के बंदो कीमत, आजादी की आंको।
दुनियां में रहकर गुलाम, सनमान कौन है पाता॥

(२८)

उस बिंदी में झांक रही थी, कमला नेहरू रानी।
जो अर्पण कर गई देश हित, अपनी भरी जवानी॥
लगा जान की बाजी उर में, एक साध ले सोई।
युग युग तक गूंजेगी जग में, जिसकी अमर कहानी॥

(२९)

उस विंदी में दुखिया अंतिम, सांसें छोड़ रही थी।
वह बेगम आजाद आश की, डोरी जोड़ रही थी॥
मुझे मिलै ! आज़ाद खुदा तू ! दे उनको आजादी।
पराधीन ! भा·त के मानों, बंधन तोड़ रही थी॥

(३०)

उम विंदी में वृद्ध भारती, खोले केश पड़ी थी
पंजर शेष रहा था जिसका, सूखी सी लकड़ी थी॥
मुंह से सांस न लेने देता, मूक हृदय रोता था।
अत्याचारी के बंधन में, सब विधि से जकड़ी थी॥

(३१)

उस विंदी में थीं अनेक, ललनायें मंगल गातीं।
भाल तिलक कर वीर सुतों के, मन ही मन हर्षातीं॥
पति के गल में माल डालती, भाई के कर राखी।
सब के संग मिल देश धर्म हित, निज निज शीश चढ़ाती॥

(३२)

उस विंदी में दीख पड़ी, फिर वही भाग्य बा ! रेखा।
कहाँ मिटाये से मिटता है, यह विधना का लेखा॥
अंधकार ही अंधकार था, महा प्रलय की छाया।
सब कुछ देखा ! पर बापू ने, और न कुछ भी देखा॥

विश्व बापू

(१)

कौन है ! पाषाण उर जो, हा ! नहीं पिघलात।
लख अचेतन ! वृद्ध भारत, गोद भारत मात ॥
उर में वेदना थी मूक, होते थे हृदय के टूक।
विधना की भयंकर चूक ॥
चूक विधना की निरख कर, नैन से जल जात।
लख अचेतन ! वृद्ध भारत, गोद भारत मात ॥

(२)

ध्यान में इक बिन्दु बिन्दी के नयन की राह।
भाल पर बा के गिरा; जिसमें भरा उत्साह ॥
मानो दिव्य जीवन दान, कोई फूंकता हो प्रान।
पाया था अभय वरदान ॥
उस अभय वरदान में थी, और भी कुछ चाह।
भाल पर बा ! के गिरा, जिसमें भरा उत्साह ॥

(३)

चातकी ने नैन खोले, स्वाति जल कण जान।
पान करती थी अधर की, वह मधुर मुस्कान ॥
जिसमें था भरा इक प्यार, टूटे तार की झंकार।
मानों सर्व सुख का सार ॥
सर्व सुख के सार में थी, बा ! लगाये ध्यान।
पान करती थी अधर की, वह मधुर मुस्कान ॥

(४)

हंस पड़े बापू विहंसता बा ! का आनन देख।
मिल गया आकाश भू से, ज्यों क्षितिज की रेख॥
मिलते तरण तारण हरण, अशरण और अशरण शरण।
माया ब्रह्म जीवन मरण॥
घूमता है विश्व जिस पर, थी अलौकिक मेख।
मिल गया आकाश भू से, ज्यों क्षितिज की रेख॥

(५)

होठ फडके स्वांस छोडी, कह उठी हे ! राम।
ध्यान से देखा ! लिये हैं, गोद में सुखधाम॥
हर्पित हो गया सब गात, सूखी बेल पर नव पात।
बीता रात आया प्रात॥
प्रातः था पर छा रहे, आकाश में ! घनश्याम।
ध्यान से देखा ! लिये हैं, गोद में सुख धाम॥

(६)

हाथ सीधा तब दिया, बापू के गल में डाल।
और बैठी हो गई ! मनु-की श्रद्धा तत्काल॥
श्रम से कुछ थकित सी जान, बापू ने हृदय पहिचान।
फूंका मन्त्र बा ! के कान॥
मौन थी बा ! शीश पर, बिखरे हुये थे बाल।
और बैठी हो गई ! मनु-की श्रद्धा तत्काल॥

(७]

बांये कन्धे का सहारा, ले रहा था शीश ।
गोद् में माया बिठाये, लख रहे जगदीश ॥
धुंधला सा पुराना चित्र, अपना एक जीवन मित्र ।
सारी शक्ति थी एकत्र ॥
शक्ति थी एकत्र फिर, भी क्यों तृषित वारीश ।
गोद् में माया बिठाये, लख रहे जगदीश ॥

(८)

एक कर बा ! शीश पर, था ! दूसरे में हाथ ।
क्या हुआ फिर से वही, दम्पत्य जीवन साथ ॥
जिसमें बंध रहा संसार, माया मोह का आगार ।
जग का है यही आधार ॥
सामने आधार के किसका उठा ! कब माथ ।
क्या हुआ फिर से वही, दम्पत्य जीवन साथ ॥

(९)

चार आंखें दे रही थीं, प्रेम का सन्देश ।
किन्तु उनकी कोर में, अब था विरह ही शेष ॥
सबको आयेगा यह काल, ज्ञानी हो धनी कंगाल ।
इसको कौन सकता टाल ॥
दे रहे दोनों परस्पर, एक ही निर्देश ।
किन्तु उनकी कोर में, अब था विरह ही शेष ॥

(१०)

दृष्टि के इकतार पर, होता अमर संगीत ।
पंथ एकाकी पकड़ रे ! कौन किसका मीत ॥
कैसा मोह कैसा प्यार, सब का स्वार्थ रत व्यवहार ।
झूठा है सभी संसार ॥
सार कुछ पाया न इसमें, सार हरि से प्रीत ।
पंथ एकाकी पकड़ रे ! कौन किसका मीत ॥

(११)

उस समय बापू बने थे; जान कर अनजान ।
शीश पर बा ! के उढ़ाया, प्रेम से परिधान ॥
बीते थे अनेकों वर्ष, जीवन का पतन उत्कर्ष ।
उर में शोक मिश्रित हर्ष ॥
शोक मिश्रित हर्ष में, उलझा किसी का ज्ञान ।
शीश पर बा ! के उढ़ाया, प्रेम से परिधान ॥

(१२)

कह उठी बा ! धन्य हूं, मैं ! धन्य हो, हे ! नाथ ।
छत्र सा सिर पर रखा है, प्राणपति का हाथ ॥
जो सौभाग्य की पहिचान, जिस पर है मुझे अभिमान ।
मेरे हो तुम्हीं भगवान् ।
बा ! रही भगवान् के, आगे झुका निज माथ ।
छत्र सा सिर पर रखा था, प्राणपति का हाथ ॥

(१३)

ग्रौर मुझको चाहिये क्या, धन्य मेरा भाग ।
मेल रहा है स्वर्ग भू पर, नाथ का अनुराग ॥
इससे कौन बढ़ कर राज, पाती स्वर्ग सुख मैं आज ।
रखली विश्वपति ने लाज ॥
लाज रखली गोद में, पति के रही तन त्याग ।
मिल रहा है स्वर्ग भू पर, नाथ का अनुराग ॥

(१४)

है विनय भगवान से, बस एक बारम्बार ।
जन्म कोटिक हों ! मिलै, बापू का मुझको प्यार ॥
सेवा में रहूं नित लीन, बंधन प्रेम के आधीन ।
दीनानाथ मै हूं दीन ॥
क्या न होगी दीन की, यह प्रार्थना स्वीकार ।
जन्म कोटिक हों मिलै, बापू का मुझको प्यार ॥

(१५)

नाथ मम अन्तिम समय, बस आगया है आज ।
हो क्षमा अपराध मेरा, एक करना काज ॥
खादी के वही दो तार, मेरे हित बुने इक बार ।
होगी याद ऐ भरतार ॥
डालना मृत पट उन्हीं का, जायगी रह लाज ।
हो क्षमा अपराध मेरा, एक करना काज ॥

(१६)

ले चली हूं साथ बस, अभिलाष उर में एक।
कर सकी न! भारती का, हाय! मै अभिषेक ॥
सिर पर बांधती शुभ ताज, होता सर्व सुख का साज।
मै भी देखती स्वराज ॥
देखती स्वराज मां! के चरण पर सिर टेक।
कर सकी न! भारती का, हाय! मै अभिषेक ॥

(१७)

दीन बन्धु! दीन भारत के, हरो सब त्रास।
तक रहा कब से अधोगति, हो तुम्हारी आस ॥
उठती है हृदय में पीर, नैनो से बहाये नीर।
इसको अब बंधाओ धीर ॥
धीर दो! पर विष न दो, देकर इसे विश्वास।
तक रहा कब से अधोगति, हो तुम्हारी आस ॥

(१८)

साथ हिचकी के कहा, हे राम! अन्तिम बार।
चल बसी बा! शून्य, बापू को हुआ संसार ॥
दुख की है यही तो खान, होता इस समय ही भान।
सब कुछ जानते मतिमान ॥
जान कर अनजान बनते, माथ पर कर धार।
चल बसी बा! शून्य, बापू को हुआ ससार ॥

(१६)

उड़ गया पंछी खुली थीं, आंख मुंह पर हास ।
क्यों न बोलेगी हुआ, बापू के उर आभास ।
बोले बोल री बा बोल, आंखें खुल रहीं मुंह खोल ।
मेरी नाव डावां डोल ॥
नाव डावां डोल मेरी, छोड़ दूं क्या आस ।
क्यों न बोलेगी हुआ, बापू के उर आभास ॥

(२०)

कौन था ! जो उस समय, सुनता किसी की बात ।
उठ गये बापू हृदय में, ले कठिन आघात ॥
हारे दूसरा भी दाव, उभरा और पहला घाव ।
आये याद बीते भाव ॥
भाव में बहने लगे, ऐसा बहा जल जात ।
उठ गये बापू हृदय में, ले कठिन आघात ॥

(२१)

देख रे ! देसाई तेरी, आ रही है मात ।
छोड़ कर मुझको अकेला, ज्यों गया हे ! तात ॥
तूने कर हृदय पाषाण, मारे वेदना के बाण ।
यह भी कर दुखित मम प्राण ॥
प्राण मेरे रो रहे हैं, औ शिथिल सब गात ।
छोड़ कर मुझ को अकेला, ज्यों गया हे ! तात ॥

(४)

जिसका ऊंचा सिर रहा, शील से नीचा।
जिसने मेरा उर सदा, प्रेम से सींचा॥
जो दीन दुखी के, दुख में रो उठता थी।
जिसने पर हित, अपना सर्वस्व उलीचा॥
उस महा-मना में, आग! लगाऊँ कैसे।
हा! निज कर से बा! तुझे जलाऊँ कैसे॥

(५)

जिन हाथों ने! मेरे संग नमक बनाया।
जिन हाथों ने! मेरे संग चक्र चलाया॥
बा! राजकोट का, सत्याग्रह क्या भूलूं।
जिन हाथों ने! कौमी झण्डा फहराया॥
उन हाथों से मैं, हाथ उठाऊँ कैसे।
हा! निज कर से, बा! तुझे जलाऊँ कैसे॥

(६)

बा! एक बार उर, जली क्रोध की ज्वाला।
तब हाथ पकड कर, घर से तुझे निकाला॥
आंसू बरसाती हुई, द्वार पर बोली।
क्या साथ शर्म के, ज्ञान बहा सब डाला॥
मुझ को समझाती! मैं समझाऊँ कैसे।
हा! निज कर से बा! तुझे जलाऊँ कैसे॥

(७)

ऐसे अवसर क्या करै, ज्ञान ज्ञानी का।
ऐसे अवसर क्या करै, ध्यान ध्यानी का॥
जीवन साथी जल जाय, और मैं देखूं।
धिक्कार नियम! विधना की नादानी का॥
दुनियाँ को दिल के, दाग दिखाऊँ कैसे।
हा! निज कर से बा! तुझे जलाऊँ कैसे॥

(८)

जब हो विधना प्रतिकूल, बात ना बनती।
नल ने छोड़ी थी, हा! सोती सतवन्ती॥
क्या मुझसे तू चन्द्र, बदला लेने आई।
जो मुझे जागता छोड़ चली दमयंती॥
दमयंती! तेरा प्रेम, भुलाऊँ कैसे।
हा! निज कर से बा! तुझे जलाऊँ कैसे॥

(६)

अनशन व्रत में तू, रही सदैव सहाई।
यम बंधन से मम, प्राण छुड़ा कर लाई॥
तेरे ही सत से, सत्यवान जीता है।
अब छोड़ चली क्यों, सावित्री सुखदाई॥
सावित्री! अब मैं तुझे, जिलाऊँ कैसे।
हा! निज कर से बा! तुझे जलाऊँ कैसे॥

(१०)

बा ! कभी न डाली, तूने कोई बाधा ।
फिर बोल आज किस लिये मौन है साधा ॥
सच कहदे क्या तू, मुझको परख रही है ।
अपने मोहन से, रूंठ गई क्यों राधा ॥
राधा बिन, जीवन-बीन बजाऊँ कैसे ।
हा ! निज कर से बा ! तुझे जलाऊँ कैसे ॥

(११)

दुनियां कहती है बा ! बापू ! की नारी ।
जब थी नारी अब, नारी नहीं हमारी ॥
मैंने इसका सुविशाल, हृदय देखा है ।
चालीस कोटि की थी, सच्ची महतारी ॥
ऐसी मां को ! ना ! शीश झुकाऊँ कैसे ।
हा ! निज कर से बा ! तुझे जलाऊँ कैसे ॥

(१२)

मैं मान रहा हूँ, अमर नहीं है काया ।
आती जाती है ज्यों, तरुवर की छाया ॥
जाओ बा ! जाओ, हुई साधना पूरी ।
अब गया तुम्हारा, राज्य हमारा आया ॥
जिस राह अनेकों ! गये न जाऊं कैसे ।
हा ! निज कर से बा ! तुझे जलाऊँ कैसे ॥

विश्व बापू

(१)

मैं कर चुका 'देसाई' का, यह कर्म है तेरा महा ।
निज सुत अनुज का, कर पकड़ कर मौन बापू ने कहा ॥
नत ग्रीव सुत ने मात की, करदी प्रज्वलित तव चिता ।
स्पष्ट परिभाषा हुई, सुत कौन ! क्या ? माता पिता ॥

(२)

साख थी जिसकी सदा, उसकी न अब कुछ साख थी ।
बा ! कहां थी अस्थि-पुष्पों को छिपाये राख थी ॥
धैर्य्य धरने के लिये है, रीति क्या जग की नई ।
हाय ! दो गज भूमि पर, बा ! की समाधी बन गई ॥

(३)

जिस महल में शान से, होती रही रंग रेलियां ।
आज उस पर गिर रही हैं, शोक की हा ! बिजलियां ॥
विश्व सब आनन्द में; सुख नींद ! जीभर सो रहा ।
और बापू ! के लिये, संसार दुखमय हो रहा ॥

(४)

कौन वह बैठा हुआ है, नत किये निज भाल को ।
आंसुओं से जो बुझाते हैं, हृदय की ज्वाल को ॥
किन्तु बुझती ही ! नहीं वह, और बढ़ती जा रही ।
याद में इक याद अपना, रंग प्रतिपल ला रही ॥

(५)

आ रही थी एक रोशन-दान से, कुछ चांदनी।
जो सदा विरही के उर को, और दुख दायी बनी॥
वस्त्र कुछ ओढे, लगाये थे, कमर दीवार से।
बन्द कर ली आंख, क्या? उकता गये संसार से॥

(६)

क्या कहूँ वह कौन थे, नर रूप में भगवान थे।
आप ही उपमेय अपना, आप ही उपमान् थे॥
क्या सती के शोक में, बैठे सदाशिव लीन हैं।
विश्व मोहक! आज बन्धन, प्रेम के आधीन हैं॥

(७)

कौन बैठा है उदधि का, पान करने के लिये।
दीन दुखियों का उचित, सनमान करने के लिये॥
कौन यह रचने लगा, अब और ही संसार है।
क्योंकि इस संसार में, दुख का न पारावार है॥

(८)

निज प्रिया की याद में; क्या उर दबाये वेदना।
मौन अज बैठा हुआ है; पूर्ण पत्थर का बना॥
क्या हुआ वैराग्य जब, सीता गई भू में समा।
आज रघुराई! महल में, क्यों? रहे धूनी रमा॥

(९)

जल गया क्या आदि कवि के, दीप उर में ज्ञान का।
आंसुओं से लिख रहे हैं, क्या सुयश भगवान् का॥
आज गौतम पा रहे क्या! सुख अलौकिक त्याग का।
श्रोत उर में बह रहा; जिनके प्रबल वैराग का॥

(१०)

सर नवासों के निरख कर, रो उठे वह बा-वफा।
आंख करके बंद बैठे, क्या? मुहम्मद मुस्तफा॥
खोजता अपने हृदय में, खो गई बेगम कहां।
कब्र में मुमताज को क्या, रख चुका शाहे-जहाँ॥

(११)

क्या बहादुर शाह आहें! भर रहा रंगून में।
क्या भरेगा जोश फिर से, कोई ठण्डे खून में॥
आंकना पड़ता है अन्तिम, मूल्य तो बलिदान का।
हो रहा क्या भाग्य निर्णय, आज हिन्दुस्तान का॥

(१२)

रूप रानी की स्मृति में, मौन मोती लाल हैं।
क्या जवाहर लाल कमला के लिये बेहाल हैं॥
जुल्म की हद और क्या, होती यहीं! समझा गई।
जेल में आजाद को क्या? याद बेगम आ गई॥

(१३)

द्वार सहसा खुल गया, इस वेग से आई हवा।
भंग तंद्रा हो गई क्या? आ गई कस्तूर बा॥
उठ चले बापू न था कुछ, वाटिका में आ गये।
देख उनको फूल थे, जो भी खिले मुरझा गये॥

(१४)

मुँह छिपाने के लिये, नक्षत्र घबराने लगे।
आज क्यों आकाश में, फिर श्याम घन छाने लगे॥
घूमता था किस के बल पर; था न कोई साथ में।
आज लाठी भी नहीं थी, कपकंपाते हाथ में॥

(१५)

साथ में कुछ फूल लेकर, जब वह आगे को चला।
देखने कण कण लगा, इनका करेगा क्या भला॥
होगई धीमी हवा, नभ चीर अन्तस रो पड़ा।
लख रहा माया किसी की, और दृढ़ता से खड़ा॥

(१६)

हो गया ऐसा अंधेरा; कुछ न दिखलाई दिया।
और दृढ संकल्प ने कब; ध्यान है इस पर दिया॥
बा! औ देसाई स्मृति में; दो समाधी थीं जहां।
ठोकरें खाते हुये फिर; आ गये बापू वहां॥

[छप्पन]

विश्व बापू

(१)

बैठ कर दो समाधि के बीच, बीच में चढा श्रद्धा से फूल।
वहीं पर लेट गये चुप चाप, और अपने आपे को भूल ॥
न हिलता डुलता तनिक शरीर, आंख होगई आपही बन्द।
अधर पर हल्कीसी मुस्कान, न जाने था कितना आनंद ॥

(२)

दिखाई पड़ी स्वप्न में एक, अलौकिक सुरमाता सुख रूप।
सजाये शस्यश्याम परिधान, महाछविथी सबभांति अनूप ॥
शीशपर हिम-गिरका शुभताज, चरण धोताथा सिंधुअपार।
गलेमें सुर सरिता की माल, हाथ में विजय पताका धार ॥

(३)

झुकाये नवयुवकों का यूथ, खड़ा था जिसके आगे शीश।
न क्यों फिर फूले फले सुदेश, मात जबदेती हो आशीश ॥
सभी थे हृष्ट पुष्ट बलवान, सभी के सुन्दर स्वच्छ शरीर।
नही थे भांति २ के रोग, सुगन्धित शीतल मन्द समीर ॥

(४)

वहां की ललनायें आदर्श, ज्ञान विद्या बल बुद्धि अनूप।
विजय करतीं जीवन संग्राम, लक्ष्मी, दुर्गा, शारद, रूप ॥
वहां थी नहीं धर्मकी आड़, कि जिसमें फांसाजाय शिकार।
वहांथा नहीं अंधविश्वास, कि जिसके बलपर होव्यभिचार ॥

(५)

नहीं होता था बाल विवाह, नहीं होता था वृद्ध विवाह ।
सुखी सबका जीवन सबभांति, नहींथी अबलाओंकी आह ॥
उचित विधवाओं का सनमान, सभी करते थे भलीप्रकार ।
मिलै जिससे उसको संतोष, कर्म उसकी इच्छा अनुसार ॥

(६)

घरों में कन्याओं को मात, पढा लेती थीं अपने आप ।
सभी विद्या में परम प्रवीण, लगा उर देशधर्म की छाप ॥
बने थे शिक्षा सदन अनेक, जहां की शिक्षा थी आदर्श !
पुत्र को सौंप गुरू के पास, मात पितु आते चले सहर्ष ॥

(७)

झूठ चोरी दम्भी पाखंड, न थी गुण्डा शाही की मार ।
सभीके संग होताथा न्याय, न था रिशवत का गर्मबजार ॥
वहाँ पर पक्षपात क्यो होय, जहां पर उर में उपजा ज्ञान ।
गुणीजनका होता सनमान, सभी थे गुणग्राहक मतिमान ॥

(८)

वहां के राजा और नवाब, प्रजाहित सोच रहे दिन रात ।
शांतिकी सुखद व्यवस्था बीच, न होपाता कुछभी उत्पात ॥
प्रजा भी सबविध से तैयार, मिलै जैसा भी जब आदेश ।
हृदय से देती आशीर्वाद, हमारा युग युग जिये नरेश ॥

(६)

हृदय सबका अपनासा जान, वहाँका धनिकवर्ग मतिमान।
नहीं पीता गरीब का खून, सुखीसबविध मजदूर किसान॥
वहां की भाषा भूषा भेष; देख कर होता हर्ष महान्।
अहिंसा सत्य प्रेम व्यवहार, बना था सर्व सुखोंकी खान॥

(१०)

सभी निज धर्मकर्म आरूढ, सभी को सब धर्मों से प्यार।
वहां थी होली ईद समान, नहीं हो पाती थी तकरार॥
नहीं था छूतछात का भूत, नहीं थी हठधर्मी की मार।
सभीमें दया, क्षमा, सन्तोष, एक मानवता का व्यवहार॥

(११)

बनों में शोभित साधु कुटीर, साधना में रहते नित लीन।
नहीं थे उनके शाही ठाठ, एक बस बांधे रहे कोपीन॥
वहांपर संध्यासमय गृहस्थ, करें निज २ गृह हरिगुणगान।
बने थे नहीं कीर्तन भवन, जहां पर नाच रहे भगवान॥

(१२)

वहां पर पांचों वक्त नवाज, वहां पर पंच यज्ञ नित कर्म।
अतिथ का होता था सत्कार, जानते सभी धर्म का मर्म॥
गाय थीं हर घर में दो चार, प्रेम से सभी रहे थे पाल।
वहां थी गौशालायें नहीं, जहाँ पर बैल उड़ायें माल॥

(१३)

वहां निज देश धर्म के हेतु, आपदायें, सब भाँति उठाय।
न था ऐसे अगुओं का नाम, करे चंदा औ चट करजांय॥
सभी के उर में था एकप्रेम, सभीके उर में थी एकआग।
शहीदों की समाधिपर नित्य, जलाया करते सभीचिराग॥

(१४)

घूमकर देखे सब स्थान, न पाया तनिक कहीं भी क्लेश।
उठे बापू के उर में भाव; प्रभो ! ऐसा करदो मम देश॥
झुकाया श्रद्धा से कर जोड़; उसी सुरमाता को निज माथ।
मात ने हृदय लगाया लाल, प्रेम से फेरा सिरपर हाथ॥

(१५)

और बोली क्या ? भूले वीर, तुम्हीं ने रखली मेरीलाज।
अरे ! मै तेरी भारत मात; आज पाया मैंने स्वराज॥
हुआ बापू का गद् गद् कठ; हृदय में छाया हर्ष महान्।
बोल एक स्वर से उठा स्वदेश; हमाराप्यारा हिन्दुस्तान॥

(१६)

लगाई समचुर ने तबबांग; किया चिड़ियों ने मंगलगान।
बजा मंदिर में घन्टा शङ्ख; और मस्जिद में हुई अजान॥
न टूटी उसकी सुखमयनींद; न बीती उसकी सुखमयरात।
जगाया पकड़ किसीने हाथ; उठो बापू ! होगया प्रभात॥

विश्व बापू

(१)

दासता निशा का अंधकार ! छिन्न भिन्न हुआ,
सुखद स्वतंत्रता का, फैलने लगा प्रकाश।
'विकल' सुमंगल प्रभात की, छटा विलोक,
आप ! नव निर्माण करने चला विनाश ॥
दीनता मलीनता औ, भीरुता विलुप्त हुई,
साहस सुभट का, निरख मंद मृदु हास।
जाग उठीं ! सदियों की, सोई हुई भाग्य रेख,
जाग उठे! भारतीय, जाग उठा इतिहास ॥

(२)

भेद नीति द्वारा जो, फैलाया गया वैमनस्य,
एक रस एकता में, भेद भाव घुल गये।
अपनी कमी को जब, आप जान पाये तब,
पश्चाताप आंसुओं में, सारे पाप धुल गये ॥
एक रंग एक ढंग, एक संग थी उमंग,
देश के स्वतंत्र करने को वीर तुल गये।
गूँज उठी ! भारती की, वीणां तब अकस्मात,
'विकल' अतीत के, पुनीत पृष्ट खुल गये ॥

[३]

ऐसा आया झोंका एक, सहसा स्वतंत्रता का,
दहक उठीं ! जो दबी, राख में अंगारियाँ ।
अबला कहाँ थीं सबला थीं ! वीर ललनायें,
करतीं सहर्ष ! बलिदान क तैयारियाँ ॥
पति सुत भ्रात क , असीम देख देश प्रेम,
अट्टहास कर उठीं ! मार किल कारियाँ ।
'विकल' था उग्र रूप, आज रण चंडियों का,
कूद पड़ीं क्रान्ति बीच, भारत की नारियाँ ॥

[४]

जाग उठा ! स्वाभिमान, आज स्वाभि मानियों का,
दासता की कालिमा, सभी को खलने लगी ।
तोड़ दिये बंधन, अनेकता के एकता ने,
चाल भी कुचालिओं, की हाथ मलने लगी ॥
ऊपर उठाया मुख, नत ग्रीव 'भारती' ने,
'विकल' निराश की, सुआश फलने लगी ।
देखा है ! अनेक ही, पतंग जलने को तब,
आप ही ! स्वतंत्रता की ज्योति जलने लगी ॥

(५)

सत्य के प्रकाश ने, असत्य का विनाश किया,
एक हुये सबका, विधान एक हो गया।
सारे ही तिफरके न, जाने कहाँ जाते रहे,
सब का 'तिरंगा ही, निशान एक हो गया ॥
हृदय में सभी के बस, एक ही लगी थी आग,
देह भिन्न ! किन्तु, अरमान एक हो गया।
'विकल' दूई का दूर, दिल से फितूर हुआ,
वेद गुरू ग्रंथ औ, कुरान एक हो गया ॥

(६)

पुलिस औ फौज ने, जवाब ही दिया था साफ,
भाइयों के सीने पै न, गोलियाँ चलाये हम।
आपस की फूट का लिया है फल भोग किन्तु,
किसी से नहीं है कभी, किसी बात में भी कम।
करो या मरो का जब, ध्येय सामने है तब,
'विकल' स्वतंत्र देश, करके ही लेगें दम।
अब तो 'गुलामी' दूर, करना हमारा धर्म,
कैसा गंगा जल और कैसा आवे जम जम ॥

[७]

मां के आसुओं का उठो, विकल चुकादें मूल्य,
धूल में न और कोई, अश्रु विन्दु रिलजाय।
आई वरदान वेला, दूर करो अभिशाप,
क्यों न भारती का अब, हृदय कंज खिल जाय॥
नीति औ अनीति न विचारो अरे! मारो मरो,
जैसे भी हो ब्रिटिश का, राज आज हिल जाय।
दासता का सिर से, उदारदो महान भार,
मारदो! जहाँ भी 'अंग्रेज' कोई मिल जाय॥

[८]

आलसी प्रमादी बलहीन, समझा था जिन्हें,
आज वही! भारत के, शेर जागने लगे।
सिर से कफन बाँध, विकल सुबीर चले,
देश हित जीवन का, मोह त्यागने लगे॥
देख दृढ़ता को काँप, उठी सरकार हिन्द,
अंग्रेज गोलियाँ भले ही दागने लगे।
जितना दबाया उतनी ही, बढ़ी क्रान्ति ज्वाल,
भारत को छोड़ के, विदेशी भागने लगे॥

सुभाष-प्रस्थान

(१)

हिन्द में उस वक्त जनता, हो रही बेजार थी।
बांध कर सिर से कफन, हर बात को तैयार थी ॥
देख हालत खूब चक्कर में, ब्रिटिश सरकार थी।
अब तो आजादी गुलामों के, गले का हार थी ॥
बह रहे थे बिन खिवैया, के सभी मझधार में।
देश के नेता पड़े थे, बंद 'कारागार' में ॥

(२)

हिन्द से बाहर चलूं, तब बोस के उर बात आई।
फिर यकायक जेल से, गायब हुये करके सफाई ॥
पहिले जर्मन और फिर, जापान से पाई ब॰ाई।
पहुंच कर रंगून में तब, फौज अपनी ही बनाई ॥
हो गये लाखों इकट्ठे, एक ही आवाज में।
जाने क्या जादू भरा था, उस शहीदे नाज में ॥

(३)

सब हुये बेचैन जब, जय हिन्द का नारा लगाया।
खून खौला और चलनेका, बिगुल जिस दम बजाया ॥
भूल अपने को गये ऐसा हृदय मे जोश आया ॥
हिन्द के आजाद करने को कदम अपना बढ़ाया।
जितने आगे को बढ़े उतना ही बढ़ता हौसला था।
हिन्द वाला हिन्द पर बलिदान होने को चला था ॥

(४)

कब्र पर सब आगये, जिस दम 'बहादुर शाह' की ।
एक बूढ़े मौलवी ने, पहिले बिस्मिलाह की ॥
फातहा पढ़ ! हाथ रख, दिल पै जब उसने आह की ।
आँसुओं में बह चली, किश्ती 'इबादतगाह' की ॥
क्या कहूं ! उस वक्त था, कैसा समां रंगून का ।
लिख रहा था आस्मां पर, जो फिसाना खून का ॥

(५)

और नेता जी ने जब, आगे कदम अपना बढ़ाया ।
चुपके चुपके दाब दिल को, दाग सीने का दिखाया ॥
आँख से आंसू गिरे, सिजदा किया जब सिर झुकाया ।
लहद की हर ईंट ने, तब यह तराना साफ़ गाया ॥
गाजियों में ! बू रहेगी, जब तलक ईमान की ।
'तख्ते लंदन' तक चलेगी, तेग हिन्दुस्तान की ॥

(६)

होगया 'जय हिन्द' कहके, जब वह दीवाना खड़ा ।
मुल्क का रहबर वतन का, शेर मरदाना खड़ा ॥
शमआ आजादी का वह, जाँ बाज पर-वाना खड़ा ।
जिंदगी जिंदा दिली का, साफ़ अफसाना खड़ा ॥
चुप रहा ! कुछ देर जब, जोशे वतन बहने लगा ।
तब उठाकर हाथ, शेरे हिन्द यों कहने लगा ॥

(७)

गुल चढ़ाओ ! यह लहद है, उस बहादुर शाह की।
जान जाने की नहीं, जिसने कभी परवाह की ॥
कर चुका है ! खूब तय, मंजिल सदाकत राह की।
कह रही खम ठोक कर, हर ईंट इस दरगाह की ॥
लेंगे बदला ! ठानली है, अब तो खासो आम ने।
बोल तो लाया था क्या, हडसन तुम्हारे सामने ॥

(८)

तेरी कुर्बानी पै कुर्बां, क्यों ? भुलाई जायगी।
जो न रंग लाई थी अब तक वह आज रंग लायगी॥
जंग आजादी में तेरी, याद जिस दम आयगी।
मंजिले मकसूद पर, हमको वही पहुंचायगी ॥
ओ जफर ! आया हूं तुझको, हिन्द से रोने को मैं।
माँ के दामन से गुलामी, के निशाँ धोने को मैं ॥

(९)

इस जगह घंटी बजाने से, नहीं 'भगवान' आते।
औ अजाँ पर भी नहीं, कोई यहाँ ईमान लाते ॥
चर्च के गाने यहां कब, बोल 'ईसा' को सुहाते।
मन्दिर मसजिद और, गिरजा को यहाँ सब भूल जाते ॥
यह जगह वह है जहां, लगती है बाजी जानकी।
है 'इबादत गाह' मेरे, मुल्क हिन्दुस्तान की ॥

[सड़मठ]

(१०)

ईसा हजरते मुहम्मद, दोनों इसमें रह चुके हैं।
देवकी की गोद में, कुछ कृष्ण जी भी कह चुके हैं॥
मां की आंसू धार में,वह दिल जले भी वह चुके हैं।
हाथ पर सिर रखके सब, जुल्मों सितम भी सह चुकेहैं॥
खिडकिया 'काबा' बनीं है, बुर्ज 'जेरुस्लाम' है।
इस इबादत गाह की, हर ईंट 'सालिग्राम' है॥

(११)

जबकि दुनियांकी सभी,चीजों को सब कहते हैं फानी।
फिर भला कैसा है मरना, और कैसी जिन्दगानी॥
मुल्क की खिदमत में,दोनों आँख से बहता है पानी।
अपनी 'मुट्ठी' में दबा बैठे हैं, हम अपनी जवानी॥
रह गई किसकी रहेगी, बोल दुनियां में निशानी।
मरने वालों को सबक, सिखलायगी मेरी कहानी॥

(१२)

मस्त होकर पी रहा है, क्या तू अंगूरी का जाम।
हुस्न की दुनियां में ठोकर, खारहा है सुबहो शाम॥
हाथ रख कर दिल पै बहदे,क्या यह इंमानोंके काम।
क्या रहेगा उम्र भर तू यूहीं, गफलत में गुलाम।
ऐसे कानो में तो बस, शीशा गल कर डालदें।
मुल्क के जो हुक्म को, कानों में सुनकर टालदे॥

(१३)

हमने माना खूब ! धन वालों, में तेरा नाम है।
    फिलसफी का तेरी डंका, बजता आठों याम है ॥
जिस जगह घूमा नहीं तू, कौनसा वह धाम है।
    जिन्दगी औ मौत का, सोचा कभी अंजाम है ॥
मुल्क की खिदमत में न, झुक जाय तो किस काम की।
    ऐसी गर्दन को इजाजत, मेरी 'कत्लेआम' की ॥

(१४)

तू अगर 'सन्यास' ले तो, ले वतन के वास्ते।
    गर जटायें ही रखे, रखले वतन के वास्ते ॥
खाक ही मलनी हो तो मलले, वतन के वास्ते।
    और भी करना ही सो, करले वतन के वास्ते ॥
मान कहना ! काम कुछ, करजा वतन के वास्ते।
    जिस तरह भी मर सके, मरजा वतन के वास्ते ॥

(१५)

मेरी मां वह है कि जिसके, पेट को टुकड़ा नहीं है।
    मेरी माँ वह है कि जिसके तन पै अब कपड़ा नहीं है॥
तू बता ! रोने को उसके, कौनसा दुखड़ा नहीं है।
    शर्म से ऊपर को जिसका, होता अब मुखड़ा नहीं है॥
जिसके आगे दुनियाँ थी सब दिन भिखारी की तरह।
    चूमने को पैर झुक जाती, पुजारी की तरह ॥

(१६)

मेरी माँ वह है जो रहती, आज टूटी झोंपड़ी में।
बाल का नामो निशाँ, जिसको न सारी खोपड़ी में॥
हाथ पैरों में न दम, न रोशनी आंखें गढ़ी में।
फिर भी रो उठती है, उसकी याद की गर्मी कड़ी में॥
लाल इसका था शहीदाना 'इलाहाबाद' का।
नाम तुमने भी सुना, होगा कभी 'आजाद' का॥

(१७)

मेरी माँ वह है न जिसने, एक भी आंसू बहाया।
मौन होकर! देश की, वेदी पै बेटे को चढ़ाया॥
किसके दुख में हैं दुखा, यह आज तक न जान पाया।
जिसने भी पूछा इशारे से, फकत इतना बताया॥
क्या हुआ लख्ते जिगर का सुनके दिल हिल जायगा।
पूछलो सतलज से जाकर, सब पता मिल जायगा॥

(१८)

मेरी माँ वह है कि जो, दिन रात फाके से गुजारे।
आह जिसके दिल ही दिल में मिट गये अरमान सारे॥
ठोकरें खाती हुई! फिरती, फटा आंचल पसारे।
कौन है वह वीर जो, गोदी में इसकी भीख डारे॥
इसकी आजादी पै बाजी, अब लगादो जान की।
और लिखदो खून से, तारीख हिन्दुस्तान की॥

(१६)

लहर में 'लहरी' सा, वह जाऊँ वतन के वास्ते।
मिस्ले रोशन क्यों न, जल जाऊं वतन के वास्ते ॥
बनके 'बिस्मिल' क्यों न, तड़फाऊं वतन के वास्ते।
क्यों न मैं 'अश्फाक़' बन जाऊं, वतन के वास्ते ॥
अब तो उठ बैठो अभागो, माँ के बन्धन खोलदो।
मिलके सब इक साथ जय, हिन्दुस्तां की बोलदो ॥

(२०)

है न मेवा से गरज, औ न गरज मिष्टान से।
मुंह लगाऊंगा न हलुवा, पूरियों पकवान से ॥
खूब भर पाया गुलामी के, सभी सामान से।
रोटियाँ खाता हूं, आजादी की सूखी शान से ॥
पेट मेरा खूब वाक़िफ़ है, मेरे क़ानून से।
और शै का नाम ले, तो चीर दूं नाखून से ॥

(२१)

मेरे सीने से न कोई, देखना सीना लगाना।
वह लिपट जाये भले, जिसको हृदय अपना जलाना॥
गोलियों के सामने, सीखा है इसने फूल जाना।
छलनी छलनी होने पर भी, हौसला दूना बढ़ना ॥
मरने वाला मुझसे कोई, मरने का फन सीख जाय।
मरते दम तक पीठ अपनी जो न दुशमन को दिखाय॥

(२२)

मुल्क की खिदमत कहाँ का, जुल्म है कोई बतादे ।
हाथ रखकर दिल पै कोई, तो बता मेरी खता दे ॥
चाहे फाँसी पर चढ़ादे, आग में जिन्दा जलादे ।
जिस तरह से जी में आये, मेरी हस्ती को मिटादें ॥
प्रार्थना प्रभु से यही, जिस वक्त मेरी जान निकले ।
आखरी जब साँस हो, तब मुंह से हिन्दुस्तान निकले ॥

(२३)

कृष्ण ईसा औ मुहम्मद, के उठो ईमान जागो ।
दीन दलितों के कलेजे, की कसक अरमान जागो ॥
वीरता की आन जागो, शान हिन्दुस्तान जागो ।
पूज्य बापू के अलौकिक, सत्य की, सन्तान जागो ॥
अब भा गर करवट नहीं ली, अ. युंहीं सोते रहोगे ।
याद रखना ! जिन्दगी भर, सर पटक रोते रहोगे ॥

(२४)

अब जहां में रह न पायेगा, गुलामी का निशान ।
अपने अपने मुल्क की, खातिर उठे हैं नौ जवान ॥
जङ्ग आजादी में देते हैं, खुशी से अपनी जान ।
हिन्द के लेकिन मुकद्दर का, करूं मैं क्या बयान ॥
रूस जर्मन चीन जागे, जग उठा जापान है ।
है प्रभु की ! शान क्यों ? बेहोश हिन्दुस्तान है ॥

(२५)

मिट गये सारे तिफरके, एक ही ! ईमान है अब ।
एक ही ! बस आरजू है, एक ही अरमान है अब ॥
आँख में नक्शा जमा है, एक ही बस ध्यान है अब ।
हर तरह करना हमें, आजाद 'हिन्दुस्तान' है अब ॥
शेर कहते हैं, उन्हे जो, मौत से । डरते नहीं हैं ।
मुल्क पर जो मर गये, हरगिज मरा करते नहीं हैं ॥

(२६)

कौनसा है 'जुल्म' बाकी, जो न भारत सह चुका है ।
और सदियों से गुलामी, की निशानी रह चुका है ॥
खून कितने ही शहीदों का, यहाँ पर बह चुका है ।
अब कसम खाकर उन्हींकी, दिल हमारा कहचुका है ॥
आज 'गोरों' के मिला, मिट्टी में सब 'अरमान' देंगे ।
और भारत से गुलामी का, मिटा अपमान देंगे ॥

(२७)

जो 'अहद' हम कर चुके हैं, अब उसे पूरा करेंगे ।
मुश्किलें आयें भले, हम मुश्किलों से कब डरेंगे ॥
पैर जो 'आगे' बढाया वह, नहीं ' पीछे धरेंगे ।
वास्ते अपने 'वतन' के, हम 'जियेंगे' औ मरेंगे ॥
अब हमारी ! देखता है , राह वह 'भारत' हमारा ।
देर कैसी ' जब हमारे, खून ने हमको पुकारा ॥

(२८)

देखते हो ! सामने वह, क्या नदी बल खा रही है ।
औ पहाडों की बुलंदी, साफ ही ! बतला रही है ॥
वह सघन बन की सघनता, क्या नहीं समझा रही है ।
कौनसी ? ऐसी कठिनता, जो न आगे आ रही है ॥
पैर से हम मुश्किलों के, मुँह मसलते ही ! चलेंगे ।
वीरता से दुश्मनों के, सिर कुचलते ! ही चलेंगे ॥

(२९)

बाद 'मरने' के । न मेरी, ल्हाश पर आंसू बहाना ।
याद रखना लहद पर, कोई न हरगिज गुल चढ़ाना ॥
आग जिसके दिल में हो, तो वह शमा आकर चलाना ।
और गाना हो ! तो गाना, मुल्क का मेरे तराना ॥
हिन्द मेरा ! हिन्द का मैं, जब 'सदा' यह आयगी ।
'रूह' मेरी भी, उसी के, साथ मिलकर गायगी ॥

(३०)

रह गई है बात बोलो, कौनसी 'ईमान' की ।
'आरजू' अब तो यही है, आखरी । अरमान की ॥
गर खुली हों 'आँख' बाजी, लग चुकी हो जान की ।
तब दिखा देना ! मुझे, तस्वीर 'हिन्दुस्तान' की ॥
मुंह खुला रह जाय तो, यह जान दिल का हाल लेना ।
'खाक' तब मेरे वतन की, मेरे मुंह में डाल देना ॥

(३१)

हिम्मते मरदां अरे ! मददे खुदा का गीत गाओ ।
आज तक जो कर नहीं पाये, उसे करके दिखाओ ॥
हर तरह बरबाद कर डाला, उन्हें अब तो मिटाओ ।
है जरूरत हन्द पर, इस वक्त अपना सिर चढ़ाओ ॥
माँगती है ! सुन रहे हो, देखलो 'बलिदान' माता ।
कहदो आते हैं अभी, हम देंगे अपनी जान माता ॥

(३२)

कौन ? हिन्दू कौन ? मुसलिम, सर न तू बेकार फोड़ ।
सारे मजहब मुल्क मिल्लत ! का यही तो ! है निचोड़ ॥
नाम 'मिटजाये' सभी दें, एक 'मुट्ठी' खाक छोड़ ।
मुट्ठीभर की मुट्ठियों में, दब रहे 'चालिस' करोड़ ॥
क्या गुलामों ? का है मजहब, तोड़ सब कानून दो ।
मैं ! तुम्हें 'आजाद' कर दूंगा, मुझे तुम खून दो ॥

(३३)

खून लो ! हम खून देंगे, बस यही 'जनता' पुकारी ।
खून देंगे ! खून ही क्या, जान भी 'हाजिर' हमारी ॥
जो मिला ! मारा वही, चाकू, छुरी, बर्छी, कटारी ।
दे रहे थे खून बालक वृद्ध, क्या ? नर और नारी ॥
फिर सभी ने जोर से, जयहिन्द का नारा लगाया ।
खून ने ! जब खून देखा, और दूना 'जोश' आया ॥

(३४)

खूब 'नेता जी' की चारों, ओर फैली थी बड़ाई ।
जोश था दिल में वतन का, हिन्द पर करदी चढ़ाई ।।
फौज अंग्रेजों ने अपनी भी, सभी आगे बढ़ाई ।
तब हुई थी 'कोहिमा' पर, खूब ही डट कर लड़ाई ।।
हिन्द के रण बाँकुरे सब, खोल कर दिल लड़ रहे थे ।
और दूने चाव से, वह खूब 'आगे' बढ़ रहे थे ।।

(३५)

होश गोरों के उड़े ! अपनी, बचा कर 'जान' भागे ।
पैर उनके टिक न पाये, भारती वीरों के आगे ।।
मार दुश्मन को दिया, या वीरता से प्राण त्यागे ।
आज ही तो मुद्दतों के, बाद सोये 'शेर' जागे ।।
बात जो बिगड़ी हुई थी, सब तरह से वह बनाली ।
अन्त को उनके गले ही में, विजय ने माल डाली ।।

(३६)

हिन्द में भी। हो रहा था, खूब गोरों का सफाया ।
अब न रह पाये यहाँ, अंग्रेज भी यह जान पाया ।।
भूत पाकिस्तान का, फिर खूब 'जिन्ना' पर चढ़ाया ।
तब बृटिश सरकार ने, प्लान 'आजादी' सुनाया ।।
हिन्द के 'टुकड़े' करा, बरबाद करके वह गये थे ।
क्या ? कहें कैसा हमें, आजाद करके वह गये थे ।।

भारत-विभाजन

क्यों रुकी लेखनी विकल हृदय अकुलात।
हा लिखी न जाती लिखनी सच्ची बात॥
स्मृति मात्र से, भर आता! दृग नीर।
निर्दयी जान कब सका, किसी की पीर॥
जिसको जिद होफिर, उसे कौन समझाय।
जब हाय! न माना, जिन्ना अन्य उपाय॥
तब सब प्रकार होकर, बापू लाचार।
कर लिये देश के दो, टुकड़े स्वीकार॥
सह लिया भारती ने, सब कुछ चुपचाप।
मिट जाय किसी विध, किन्तु गुलामी पाप॥
हम गये सभी पिछले, दारुण दुख भूल।
यह समझ रहे थे, हुआ दैव अनुकूल॥
उत्साह! हर्ष छाई थी, खुशी अपार।
स्वप्नों में! देख रहे थे, नव-संसार॥
कट गये दासता बंध, पूर्ण आभास।
हम हुये पूर्ण स्वाधीन, पूर्ण विस्वास॥
देखेंगे प्रातः सुन्दर, स्वर्ण विहान।
हो चुके अनेकों, जिसके हित बलिदान॥

प्रभु को यह लेकिन, हुआ कहाँ स्वीकार।
थी शेष अभी तो,सहनी विपद अपार ॥
सन् सैंतालिस, पन्द्रह अगस्त की रात।
कर गयी हाय वह, और नया आघात ॥
आजादी ! ऐसी मिली, हुये बरबाद।
इसको जीवन भर, सभी रखेंगे याद ॥
क्या ? त्रिपुरा नोआखली, और लाहौर।
सब देख रहे थे, मुसलमान तिल तौर ॥
पहिले करफ्यू कर, जब्त किये हथियार।
रंग बदल उठी। पाकिस्तानी सरकार ॥
हर मुसलमान को, ऐसा चढ़ा जुनून।
था यही शोर। करदो, हिन्दू का खून ॥
या अली इलाही, अल्लाह अकबर बोल।
जालिम करते थे जुल्म खूब दिल खोल ॥
मिट्टी का छिड़का तेल, लगादी आग।
सब द्वार बद कर दिये, न जाये भाग ॥
सुत माता की गोदी से, जबरन छीन।
हा दो टुकड़े कर दिये, किसी के तीन ॥
है मुसलमान को उचित कहाँ यह काम।
बदनाम कर दिया व्यर्थ, धर्म इस्लाम ॥

विश्व बापू

भोली भाली सुन्दर, अनेक सुकुमार।
अपना ही! यौवन, उन्हे हुआ था भार॥
माथे पर जबरन, गोदा पाकिस्तान।
हा! कहीं छातियाँ, काट रहे शैतान॥
जब देखा बचना कठिन, धैर्य उरधार।
तब गई! कुओं में कूद, अनेकों नार॥
हो गये! अनेकों के, उर चकना चूर।
लुट गये! अनेकों के, सुहाग सिन्दूर॥
छूट गये अनेकों लाल, अनेकों मात।
मिट गईं अनेकों बहिन, अनेकों भ्रात॥
जो हृदय हीन हो उसको किसकी शर्म।
मानवता रोई! देख देख दुष्कर्म॥
दिन था लेकिन दिन इस जीवन से ऊब।
वह दृश्य देखकर, गया सूर्य भी डूब॥
कह कहा मारकर, खुश होते मनहूस।
हा! नग्न नारियों का जब चला जलूस॥
रो पड़ीं अनेकों, द्रुपद-सुता असहाय।
है कहाँ वही 'मोहन' जो चीर बढाय॥
तब हँसे नहीं क्यों, मसजिद की मीनार।
जब किये जा रहे थे, मन्दिर बिस्मार॥

विश्व बापू

जीवित बच्चे ही, दिये आग में झोक।
कुछ टगे हुए, बर्छी भालों की नोक॥
बाजे बजते, शहनाई ताशे ढोल।
मुसलिम युवकों के, घूम रहे थे गोल॥
था जिसे ! मुसलमां, होने में इनकार।
उसका सिर फौरन धड़ से लिया उतार॥
चोटी काटी फिर खिला गाय का मांस।
है भूमि साक्षी, सूर्य, चन्द्र, आकाश॥
हा यह नारी का महा घृणित अपमान।
देखेंगे कब तक, रहता पाकिस्तान॥
क्या छोडा सबकुछ लूट लिया धन माल।
लख पती बिचारे हुए आज कंगाल॥
कितने ही दिन बीते, कितनी ही रात।
कम हुआ न बढता और गया उत्पात॥
चहुं ओर मचा था भीषण हा हा कार।
सुन पाता था कब किसकी कौन पुकार॥
थी धधक रही उर में, विछोह की आग।
चल दिये अभागे, जन्म भूमि को त्याग॥

प्रवासी प्रस्थान

[पाकिस्तान के द्वारा किये गये अत्याचारों से घबरा कर हिन्दुओं का जन समूह अर्थात विश्व के इतिहास में सबसे बड़ा काफिला अन्त को हिन्दुस्तान की ओर चल ही पड़ा]

जब चला प्रवासी जन समूह, संग में उसके अरमान चला।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला॥

[१]

जीवन भरकी संचित सम्पति, सुखका साधन सबचले छोड़।
भयभीत किन्तु आगे चलने की, लगी हुई थी एक होड़॥
अपने अपने को भूल गये, ममता रोई मुख लिया मोड़।
हत भाग्य जन्म भू से अपनी, वह युग का सम्बन्ध तोड़॥
सम्बन्ध तड़ क्या वेईमान से, कहीं विकल ईमान चला।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला॥

[२]

फाके पर फाके बीत रहे, वह कब तक रहते निराहार।
धीरज का धीरज छूट गया, बहती थी अविरल अश्रुधार॥
उतरा न दूध माताओं को, मर गये गोद में नव-कुमार।
तब आँख मूंदकर फेंक दिये, समझी कुछ हल्का हुआ भार॥
उस भार रूप जीवन में भी, मानवता का अभिमान चला।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला॥

[इक्यासी]

[३]

धन बल विद्या वैभव यौवन, यश प्रतिभा की उड़ रही धूल ।
सन्ताप ताप दुख शोक लाज, भय के उर में चुभरहे शूल ॥
निर्दोष सबर्था, कितने ही, क्यों ? मुरझाये अधखिले फूल ।
यह था अपनी करनीका फल, या थी विधनाकी महाभूल ॥
क्या शोक सिन्धुमें ठोकर ही, ठोकर खाता जलियान चला।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला ॥

[४]

चलते ही थे पर चलते थे, कुछ पता नहीं सुध बुध बिमार।
था कहीं रुदन कदन आहें, थीं कही हृदय वेधक पुकार ॥
हा ! मूक वेदना टीस कसक, औ कहीं सिसकियां चीत्कार ।
दिन में चलते थे काक गिद्ध, निश हुई साथ चल पड़े स्यार ॥
क्या मृत्यु से अभिनय करता, बरबस जीवित शमशान चला ।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला ॥

[५]

बूढ़े तो बूढ़े ही ठहरे, बूढ़ों से बूढ़े थे जवान ।
झुकगई कमर ऐसी मानो, हो बिना प्रत्यचा की कमान॥
उन अस्थिपंजरों में अटकी, प्रभु ही ! जाने थी कहाँ जान ।
वह झुके शीश फिर भी रखते, ऊचा उठनेका स्वाभिमान ।
क्या महारुदन की आंखों से, बहता नीरव कल गान चला ।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला ॥

[बयासी]

[६]

गिन गिनकर पग रखतेही थे, दुनियां भरका साहस समेट।
मृत्यु फिर भी लेती उनको, अपने ही 'चक्कर' में लपेट॥
कुछ गिरे ठोकरें ही खाकर, कुछ बैठ गये हा! पकड़ पेट।
कितने ही! मनकी मनमें रख, चुप चाप धरापर गये लेट॥
क्या 'महा पतन' के गहन गर्तसे, बचकर पुनरुत्थान चला।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला॥

[७]

शीतल जल स्वच्छ सरोवरको, देखा प्यासोंने आँख खोल।
सहसा नभ से रोटीं बरसीं, भूखे प्रभु की जय उठे बोल॥
क्या जान सकें पहिले ही से, था जालिमने विष दिया घोल।
खाकर पीकर सोए अनेक, लुट गया हाय जीवन अमोल॥
क्या सुखद सुधा के धोखे में, करके कोई विष-पान चला।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला॥

[८]

ज्ञानी अज्ञानी राव रंक, तज भेद-भाव सब थे समान।
था एक धर्म था एक कर्म, था एक रुदन था एक गान॥
थी एक चाह थी एक राह, था एक ध्येय था एक ध्यान।
थी एक बिछाने को जमीन, था एक उढ़ौना आसमान॥
क्या साम्यवाद कीनई सृष्टि, रचने विराट भगवान चला।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला॥

[तिरासी]

[९]

उनसे थी । कोसों दूर हंसी, बेबसी विचारे थे उदास ।
अब क्या जाने?कैसा विलास,क्या होता है परिहास हास ॥
था सर्वनाश मुख फैलाये, फिर भी जीवनको लगी आश ।
उस घोर निराश मेंभी था,आशा का धुंधलासा प्रकाश ॥
क्या बिना बुलाये कहीं किसीका,महा महिम मेहमान चला ।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे आगे वरदान चला ॥

[१०]

आती भविष्यकी क्षणिक स्मृति,लातीउरमें सहसा हिलोर ।
बस बढ़े चलो बस बढ़े चलो, अब शोर था सभी ओर ॥
वहरहाहिन्द आगयाहिन्द; मिलगया हिन्दका सुखद छोर ।
अब मिटी पापकी महानिशा,अब हुआ पुण्यका सुखद भोर ।
उत्साह हर्ष लेकर असीम क्या, आहों का तूफान चला ।
पीछे पीछे अभिशाप चला, आगे वरदान चला ॥

[११]

आगई हिन्द की जब सीमा, थी स्वागत को जनता अपार ।
भाई ने भाई को देखा, भर आईं । आंखें बार बार ॥
होगया सुखद जीवन उनका, जिसको समझे थे महा भार ।
'यज्ञो पवीत' चोटी ! रोई, यज्ञोपवीत चोटी ! निहार ॥
फिर गले लिपटकर हिन्दू से; हिन्दू का हिन्दुस्तान मिला ।
अभिशाप भोगने वालोंको, तब पूर्ण अभय वरदान मिला ॥

विश्व बापू

(१)

अकस्मात ही ! भारत में, प्रति शोध गया तब जाग ।
भड़क उठी ! फिर वैमनस्य की, महा भयंकर आग ॥
हमको बदला ही लेना है, लेंगें 'बदला' आज ।
सभी ओर से ! बस आती थी, यही एक आवाज ॥

(२)

उठो हिन्दुओं ! उठो हिन्दुओं, करदो कत्ले आम ।
अरे मिटादो ! अब भारत से, मुसलमान का नाम ॥
भूल चुके थे 'दया' क्षमा को, ऐसा चढ़ा जनून ।
खून करेगें ! खून करेंगें, हमें चाहियें ! खून ॥

(३)

मानवता की देख दुर्दशा, बापू दुखित अपार ।
चले शान्ति हित ! चले साथ में, बादशाह गफ्फार ॥
आखों में था प्यार ! वेदना, उर में लिये असीम ।
घूम रहे थे ! नंगे पग ही, पैदल राम रहीम ॥

(४)

वह जाते थे जहाँ ! पीड़ितों, को मिलता था प्यार ।
वहीं चला आता था मानों, दुखियों का संसार ॥
एक शान्ति का लक्ष और कुछ, ध्यान न था लवलेश ।
करीं अनेकों जगह ! प्रार्थना, दिया दिव्य सन्देश ॥

[पिचासी]

(५)

कब 'प्रसन्न' होता अनर्थ से, हिन्दू का भगवान।
कब जुल्मों से खुश होता है, मुसलिम का रहमान॥
जो भी जुल्म करै ! जालिम है, जालिम की क्या जात।
फिर ! हिन्दू औ मुसलमान की, बृथा उठानी बात॥

(६)

धर्म धर्म कह कर ! अधर्म कर, धर्म किया बदनाम।
तुम मानव हो ! मानव को है, उचित कहां यह काम॥
मुसलमान वह जो पर दुख में, हो जाये दिलगीर।
सदा 'वैष्णवजन' हरते हैं, अरे ! पराई पीर॥

(७)

तुम जिसको जितने ! दुख देते, प्रभु से उतने दूर।
'निर्दोषों' पर जुल्म करो, यह कब उसको मंजूर॥
भूल रहे हो ! पछताओगे, सिर पर है शैतान।
भेद नहीं है ! अरे एक हैं, 'गीता' 'वेद' कुरान॥

(८)

तुम भी ! हो 'इंसान' और हैं, यह भी तो इंसान।
ओ इंसान हृदय तू सब का, अपना ही सा जान॥
कौन ? मारने वाले हो तुम, यह भी किया विचार।
तुम को है तो ! इन को भी है, जीने का अधिकार।

(९)

सार यही मानव जीवन का, शुभ कर्त्तव्य विशेष ॥
जिओ और जीने दो सब को, है 'प्रभु' का आदेश ।
अरे ! किसी का भला न इसमें, करदो बंद फिसाद ॥
दाढ़ी 'चोटी' के झगड़े में, वृथा ! हुये बर्बाद ।

(१०)

किसी तरह भी जिद्दी जिन्ना, नहीं सका जब मान ।
विवश हुआ ! स्वीकार किया तब, मैंने पाकिस्तान ॥
ज्ञात नहीं था ! ऐसा होगा, निर्मम अत्याचार ॥
इतनी 'महंगी' आजादी थी, मुझे कहाँ स्वीकार ॥

(११)

भूल वही ! तुम भी करते, जो वह कर बैठे भूल ।
होगी ऐसी 'भूल' किसी के, बोले कब अनुकूल ॥
ठंडे दिल से सोचो ! समझो, यह कैसा व्यवहार ।
वह मानव क्या ? जिसे न होता, मानवता से प्यार ॥

(१२)

अपने माथे पर 'कलंक' तुम, लगा रहे हो आप ।
दूर नहीं ! वह समय करोगे, जिस दिन पश्चाताप ॥
गूँज गई ! बापू की वाणी, बुझी क्रोध की आग ।
हुई शान्ति सब ओर ! गा उठे, वही प्रेम का राग ॥

(१३)

थे कुछ कलुषित हृदय, जिन्हे बापू से पूर्ण विरोध ।
उनका 'लक्ष' यही था केवल, यवनों का प्रति शोध ॥
हम स्थापित करें ! यहाँ पर, राम राज्य अभिराम ।
हिन्दुस्तान अरे ! हिन्दू का,मुसलिम का क्या काम ॥

(१४)

यह बापू तो ! महा दुष्ट है, सुनों न इसकी बात ।
सहती है 'आघात' इसी का, घायल भारत मात ॥
किया 'कायदेआजम' इसने, वह जिन्ना शैतान ।
भारत के 'टुकड़े' होते क्यों, बनता पाकिस्तान ॥

(१५)

खैर ! बना सो बना किन्तु वह, भीषण नर संहार ।
देख चुका है ! फिर भी इसके, बदले नहीं विचार ॥
जो बिल्कुल 'विपरीत' हमारे, हृदय हीन मक्कार ।
प्रभु ही जाने ! क्यों ? यवनों से, इसको इतना प्यार ॥

(१६)

मां बेटी बहिनों ! की दुर्गति, गया निर्दयी भूल ।
नहीं खटकती है क्या ? उर में, बन कर तीखा शूल ॥
उस अनर्थ में ! एक मात्र है, सब कुछ इसका दोष ।
जब तक यह जीवित है ! तब तक, हमें नहीं संतोष ॥

विश्व बापू

(१)

नत ग्रीव खड़ा पागल सा, यमुना के कौन किनारे।
प्रभु ही जाने क्यों ? आया, है क्या विचार उर धारे ॥
किस कठिन समस्या में है, कुछ नहीं समझ में आता।
उलझी को सुलझाता है, या सुलझी को उलझाता ॥

(२)

था पिछला पहर 'निशा' भी, जाती थी हाथ पसारे।
पीले पड़ चुके कभी के, सब आसमान में तारे ॥
डरती सी कुछ सहमी सी, धीरे धीरे चलती थी।
चलती थी किन्तु समीरण, बरबस हो कर मलती थी ॥

(३)

कलरव का नाम नहीं था, किस बंधन में जकड़े थे।
क्यों ! आज नीड़ में अपने, पक्षी चुप चाप पड़े थे ॥
प्रति क्षण बढ़ता ही जाता, फैला सब ओर उजाला।
वैसे ही ! उस निष्ठुर का, होता जाता मन काला ॥

(४)

प्राची दिश में फिर सहसा, लख ऊषा की अरुणाई।
क्या मिला न जाने उसको, क्यों हंसी यका यक आई ॥
मिटगया तिमर सब जग का, उसने असीम सुखपाया।
भगवान भास्कर को तब, श्रद्धा से शीश झुकाया ॥

(५)

फिर हंसा खूब जी भर कर, बोला ! मैं नहीं डरूंगा।
चाहे कुछ भी हो निश्चय, बापू का 'खून' करूंगा॥
जैसे भी हो जिस विध भी, यह काम आज करना है।
बस एक बार ही मरना, क्या बार बार मरना है॥

(६)

शैतान चढ़ा था सिर पर, ऐसा उसको बहकाया।
हा ! अपने ही अन्तर की, आवाज न वह सुन पाया॥
जा रहा 'मारने' किसको, था पता न हत्यारे को।
यमुना जी में नहा धोकर, यमुना जी के प्यारे को॥

(७)

अपने विचार पर दृढ़ था, थी वही धारणा मन में।
आ गया अन्त को घातक, बिरला के उसी भवन में॥
संध्या को नित ही प्रभु की, थी जहाँ प्रार्थना होती।
बापू द्वारा जग जाती, मानव जीवन की ज्योती॥

(८)

बैठे अनेक ! नर नारी, पर किन्तु 'मंच' था खाली।
बापू की राह ! निरखतीं, सब की आँखें मत वाली॥
कुछ देर बाद ! जनता ने, यह अनुपम दृश्य निहारा।
'सुत कन्या के कन्धे का, वह आये लिये सहारा॥

(९)

उनको सबने कर जोड़े, वह भी थे निज कर जोड़े।
जनता 'जनार्दन' हित कब, बापू ने हाथ सकोड़े॥
धीरे से 'घातक' बोला, क्यों पांच मिनट की देरी।
बापू भी! कुछ मुस्काये, हो क्षमा 'भूल' है मेरी॥

(१०)

चढ़ गये 'मञ्च' पर फिर भी, कर जोड़े खड़े हुये थे।
अपने 'मुलक' पर जीवन, देने को अड़े हुये थे॥
जब दृष्टि पड़ी घातक पर, बापू पहिचान गये थे।
जो कुछ होने वाला है, पहिले ही! जान गये थे॥

(११)

क्या अमर सत्य पर अन्तिम, जीवन को तोल रहे थे।
थे मौन किन्तु आंखों से, वह सब कुछ बोल रहे थे॥
धीरे से तब जालिम ने, अपना पिस्तौल निकाला।
छुट गई हाथ से गोली, कर लिया आप मुँह काला॥

(१२)

कह गई व्यथा निज उर की, मैं हूँ अभागिनी गोली।
लगने ही पर क्यों बोली, लगने से प्रथम न बोली॥
मैं लगी अहिंसा के उर, मैं लगी सत्य के सीने।
मैं लगी दया के दिल में, दी मैंने शान्ति न जीने॥

(१३)

आदर्श धर्म हिन्दू का, मै कर बैठी ! मुँह काला ।
ऐसा कलंक युग युग तक, जो कभी न मिटने वाला ॥
टूटे न हाथ क्यों ? उसके, हा ! जिसने मुझे बनाया ।
चूके न हाथ क्यों ? इसके, हा ! इसने मुझे चलाया ॥

(१४)

क्या ? कलुषित जग में जननी, ऐसे भी सुत जनती है ।
क्या ? सत पुरुषों के हित भी, घातक गोली बनती है ॥
गोली से घायल होकर, वह चली रुधिर की धारा ।
गिर पड़े धरा पर बापू, अन्तिम हे राम ! पुकारा ॥

(१५)

वह राम कि अन्तर्यामी, जो सब के हृदय समाया ।
वह राम कि निज माया से, जिसने यह विश्व बनाया ॥
वह राम कि सब जीवों की, जो प्रति पल है सुधिलेता ।
वह राम कि जो दाता है, बिन मांगे सब कुछ देता ॥

(१६)

वह राम कि जिसमें जग की, सब शक्ति रमा करतीहै ।
वह राम कि जिसकी धरती, नित परिक्रमा करती है ॥
वह राम कि ज्योतिर्मय है, यह सूर्य चन्द्र क्या तारे ।
वह राम कि जिसकी सत्ता, अम्बर है बिना सहारे ॥

(१७)

वह राम कि जो सागर है, जल विविध भांति से आता ।
वह राम कि जो जलधर है, जग के हित जल बरसाता ॥
वह राम कि ऊषा जिसके, मुख की अति सुन्दर लाली ।
वह राम कि संध्या जिसकी, है अनुपम छटा निराली ॥

(१८)

वह राम कि जिसके निर्झर, जय हर हर बोल रहे है ।
वह राम सुमन जिसके हित, पंखुड़ियाँ खोल रहे हैं ॥
वह राम कि जिसका यह जग, निश वासर है गुणगाता।
वह राम कि जल थल नभ के, जीवों का भाग्य विधाता॥

(१९)

वह राम कि निज भक्तों का, भय दुख संताप मिटाये ।
वह राम कि 'जैसा' चाहो, वैसा ही ! बन कर आये ॥
वह राम कि जिसको बालक, प्रह्लाद और ध्रुव जाने ।
वह राम कि जिसका लोहा, कितने 'बलशाली' माने ॥

(२०)

वह राम कि जिसका मुख लख, दशरथ दुख भूल गयेथे ।
वह राम कि जो 'यशुदा' के, पलने में 'झूल' गये थे ॥
वह राम कि जिसका अनुपम, तुलसी को नशा हुआथा ।
वह राम कि जो 'मीरा' की, पुतली में बसा हुआ था ॥

(२१)

वह राम कि जिसके जग में, फैले हैं ! ताने वाने ।
वह राम कि जो समदर्शी, क्या ? भेदभाव को जाने ॥
वह राम कि जिसकी उलझन, को था कवीर ने खोला ।
वह राम कि जो गुरु नानक, दादू के स्वर में वोला ॥

(२२)

वह राम कि जो 'मसजिद' में, कुरश्रान वना बैठा है ।
वह राम कि जो 'मन्दिर' में, भगवान वना बैठा है ॥
वह राम कि जो 'ईसा' से, हो सकता नहीं जुदा है ।
वह राम कि जो हिन्दू है, मुसलिम के लिये खुदा है ॥

(२३)

गोली से घायल होकर, अन्तिम हे ! राम पुकारे ।
'साकेतधाम' में पहुँचे, भगवान 'राम' के प्यारे ॥
घातक पर ! जनता टूटी, सब के उर क्रोध महा था ।
पर कौन? न जाने ऐसा, करने से रोक रहा था ॥

(२४)

कह सके नहीं कुछ वापू, पर थी अन्तिम अभिलाषा।
तव मूँक हृदय ने जानी, उस मूक हृदय की भाषा ॥
मेरा 'घातक' मेरा है, कोई कुछ इसे कहेना ।
मै क्षमा मांगता ! सव से, सव इसे क्षमा कर देना ॥

(२५)

क्या करें विवश थी विधि से, मृत्यु भी अति पछताती ।
हा ! बापू के मरने से, मैं पहिले ही ! मर जाती ॥
आये अनेक ! आयेंगे, क्या ? ज्ञानी योगी भोगी ।
पर ऐसी ! मृत्यु किसी की, न हुई न आगे होगी ॥

(२६)

कुछ ही चाण में तब जग ने, यह समाचार सुन पाया ।
दुनियां के सब देशों ने, तब झंडा अर्ध झुकाया ॥
भरता जो घाव मसीहा, उसका भी 'घायल' सीना ।
है कितना बुरा जगत में, अति अच्छा होकर जीना ॥

(२७)

भारत में ! बेचैनी थी, है अरे ! कौन ? हत्यारा ।
क्या ? मुसमान ने मारा, क्या 'पंजाबी' ने मारा ॥
जिसने भी ! मारा होगा, हम उसका नाश करेंगे ।
परिणाम भले ही ! कुछ हो, मारेंगे और मरेंगे ॥

(२८)

बोले ! पटेल ! आतुर हो, फिर तभी 'रेडियो' द्वारा ।
दुख है ! महान बापू को, पागल हिन्दू ने मारा ॥
हिन्दू तो हिन्दू ही थे, हा ! राम राम करते थे ।
रोते रोते ! बापू को, मुसलिम 'सलाम' करते थे ॥

[पिचानावें]

(२९)

सब ओर 'उदासी' छाई, थे सभी शोक में डूबे।
मिलगये हाय! मिट्टी में, भारत मां के मनसूबे॥
था कौन? अभागा ऐसा, जो आज न रोया होगा।
जिसने कलुषित निज उर का, हा! मैल न धोया होगा॥

(३०)

कुछ ऐसे भी निष्ठुर थे, छिप कर कर आनंद मनाते।
बापू के मर जाने पर, हा! घी के 'दीप' जलाते॥
क्या कहूँ अरे वह क्या थे, कुछ नहीं समझ में आता।
कैसा ही पत्थर होता, वह पिघल आप ही! जाता॥

(३१)

यह उनकी करुण कथा है, पर दुख जो रहे मिटाते।
क्या इस प्रकार ही जग में, भगवान मनुज बन आते॥
गूँजेगी! तब तक बापू, यह तेरी अमर कहानी।
जब तक दुखिया यमुना में, बहता है अविरल पानी॥

(३२)

रह गया आज खोया सा, वह बिरला भवन विचारा।
उस राष्ट्र तीर्थ के हित है, नत मस्तक विकल हमारा॥
अगले दिन शव बापू का, जब राज घाट पर आया।
दिल्ली अभागिनी ने तब, अन्तिम दर्शन कर पाया॥

विश्व बापू

(१)

वह जनसमूह बापूका शव, था रहा मौन अपलक निहार।
रुंधगये अनेकों कंठ और, वह चलीं अनेकों अश्रु धार॥
अर्पित करते थे श्रद्धासुमन, शोकातुर सबही को विराग।
सब की आंखों में एक चित्र, सबके उरमें थी एक आग॥

(२)

सो रहा चिता के ऊपर हा! सबका बापू सब रहे देख।
उसके मुखपर वैसी ही थी, उसकी स्वाभाविक हास्यरेख॥
उसहास्यरेख में जो उलझा, वोसका न अपने को निकाल।
जितना सुलझे उतना उलझे, था यहीएक उसमें कमाल॥

(३)

वो हास्यरेख जिसके आगे, रह सके न उर में गुप्त बात।
वो हास्यरेख जिसके आगे, सूखी आशा भी लहलहात॥
वो हास्यरेख जिसके आगे, अभिमान हुआकिसका न चूर।
वो हास्यरेख क्या दिखारही, फिरसे जगको जलवाये तूर॥

(४)

वो हास्यरेख जिसके उरमें, थी कितने दुखियों की पुकार।
वो हास्यरेख जिसके उरमें, बहती थी अविरल अश्रु धार॥
वो हास्यरेख जो पीडित की, क्षणभर में हरती सभी पीर।
वो हास्यरेख धीरज देती, कितना भी क्यों न हो अधीर॥

(५)

वो हास्यरेख जिसके उर में, हो रहा शहीदों का तर्पण ।
वो हास्यरेख जिसको लखकर, करचुके वीर सर्वसअर्पण ॥
वो हास्यरेख नीरस उर में, भर देती थी प्रेमोत्साह ।
वो हास्यरेख जो बता गई, नित गुम राहों को ठीक राह ॥

(६)

वो हास्यरेख जो पलभर में, देती दिल के दो टूक जोड़ ।
वो हास्यरेख जिसमें विधिने; भर रक्खाथा नवरस निचोड ॥
वो हास्यरेख जो उठा गई, दलितों को ऊपर पकड़ हाथ ।
वो हास्यरेख था झुकाहुआ, जिसका हरिजनके चरणमाथ ॥

(७)

वो हास्यरेख जिसके आगे, पशुबल ने भी खाई पछार ।
वो हास्यरेख जिसको लख कर, हो जातीं पत्थरपर दरार ॥
वो हास्यरेख जिसके आगे, सब अस्त्र शस्त्र थे शक्तिहीन ।
वो हास्यरेख जो पलभर में, लेती दुशमनका हृदय छीन ॥

(८)

वो हास्यरेख जो सबही से, मिलती थी दोनों भुजपसार ।
वो हास्यरेख जो भेद भाव को, भूल हुई थी निर्विकार ॥
वो हास्यरेख जिसको सम थे, इंजिल शरह गीता कुरान ।
वो हास्यरेख गिरजा मन्दिर, मसजिद में देती नित अजान ।

(९)

वो हास्यरेख जो डाल गई, ब्रह्मचर्य महाव्रत का प्रभाव ।
वो हास्यरेख अपने उर का, भर लेती अपने आप घाव ॥
वो हास्यरेख जो मिटाचुकी, अपना धन बल वैभव अपार ।
वो हास्यरेख था जिसेमिला, नर नारायण का अमितप्यार ॥

(१०)

वो हास्यरेख जिस पर गर्वित, मजदूर और भूखे किसान ।
वो हास्यरेख जिसको लखकर, फहराता नभतोरण महान ॥
वो हास्यरेख जो सिखा गई, नित कर्मवीर को एक कर्म ।
वो हास्यरेख जो बता गई, सबही धर्मों का एक मर्म ॥

(११)

वो हास्यरेख जो करती थी, नित सत्य अहिंसाका प्रचार ।
वो हास्यरेख भारत नैया, कर गई सफलता सहित पार ॥
वो हास्यरेख जिसके उरमें, शिवशंकर का ताण्डव महान् ।
वो हास्यरेख जिसके उरमें, था प्रयलंकर का अमर गान ॥

(१२)

वो हास्यरेख जिसमें सबकुछ, जपतप श्रद्धा औ ज्ञानध्यान ।
वो हास्यरेख जिसमें सबकुछ, मानो विधका पूरा विधान ॥
वो हास्यरेख थी विश्वबीच, मानवता का सुखकर स्वरूप ।
वो हास्यरेख थी महाप्रभो का, अंश एक अनुपम अनूप ॥

(१३)

वो हास्यरेख जिसपर बजता; मां विश्वभारती का सितार।
वो हास्यरेख जगकी आंखें, रहतीथी नितप्रति पलनिहार॥
वो हास्यरेख जगरही देख, वो हास्यरेख जग रहा देख।
जिसके उर जैसे रहे भाव; थी वैसी उसको हास्यरेख॥

(१४)

नत ग्रीव खड़े थे कर जोड़े, वह वीर जवाहर और पटेल।
विधिके विधानका मिटना क्या, समझा है कोई हंसीखेल॥
होरहा पूर्ण कर्त्तव्य आज, आगे बढ़कर उर धीर धार।
श्री रामदास गांधी करते, बापू का अंतिम संस्कार॥

(१५)

हे राम! राम! कहते २ परिक्रमा करीं होकर निढाल।
सुतके करसे तब बापूकी, गिरपड़ी चितापर ज्वलितज्वाल॥
जब लगी आग तब सर्वप्रथम, जलउठे मूंछके श्वेत केश।
लिखगई लपट जिनकी नभमें, जय२ भारत जय२ स्वदेश॥

(१६)

चंदन तड़का रंग बदलउठा! धू धू करता भीषण प्रकोप।
हा! पलभर में बापूका शव, होगया न जाने कहां लोप॥
पानी पानी मिट्टी मिट्टी मिल गई, ज्वाल में वही ज्वाल।
वहगई हवा रहगया शून्य, है अटल नियम विधका कराल

(१७)

फिर अंतरिक्ष में गूंज उठा, न जाने कब का अमर राग ।
जिसके सुनने को आये थे; मानों सब ही संसार त्याग ॥
जगकी क्षण भंगुरता लखते, अपने अंतस की आंखखोल ।
चुपचाप चित्रवत खड़े हुये, मुंह से कुछ भी न सकेबोल ॥

(१८)

होगई धधकती चिता शान्त, चुनलिये गये तब सभी फूल ।
फिर भी 'आंखों में थे बापू, जाता जग कैसे उन्हें भूल ॥
रह रह कर उठती हृदय हूक, सब देख रहे थे खड़े मौन ।
चद्दर ओढ़े ! लाठी पकड़े, वह तेजी से ' आ रहे कौन ॥

(१९)

केवल भ्रम था कुछ और न था, बसरही वेदना हृदय व्याप्त ।
सब कुछ देखा, अब क्या देखें, होगई 'देवलीला' समाप्त ॥
बालक बूढ़े क्या ! नर नारी, रो उठ ! सभी थे राव रंक ।
छिप गया कहां वह राष्ट्रगगन का, निष्कलंक मंगलमयंक ॥

(२०)

'दिनकर' से देखा नहीं गया, होगया मंद सहसा प्रकाश ।
संध्या अभागिनीमहा दुखी, धरती उदास । अम्बर उदास ॥
हो रही 'निशा'बेचैन आज, आतुर अधीर थी दुखी दीन ।
फिर नक्षत्रों की कहे कौन, जब हुआ 'चन्द्रमा'ही मलीन ॥

[एक सौ एक]

विश्व बापू

(१)

जाओ बापू यह निष्ठुर जग, करता है कब घात नहीं।
सूली पर 'मसूर' चढ़ाया, सुनी किसी ने 'बात' नहीं॥
जहर पिलाया क्या ? निर्दोषी, था महान 'सुकरात' नहीं।
क्या? ईसा का खून 'क्रूस' पर, विश्व बीच विख्यात नहीं॥
'सुधादान' करने वालों को, 'गरल' पिलाया जाता है।
और सत्य के सीने पर, पिस्तौल चलाया जाता है॥

(२)

जाओ बापू ! यह निष्ठुर जग, कहाँ किसी की मान सका।
तुमने क्या कुछ नहीं किया, पर लगा नहीं अनुमान सका॥
महा पुरुष के जीवन में यह, कब किस को पहिचान सका।
दिव्य ज्ञान के भी प्रकाश में, मिटा नहीं अज्ञान सका॥
जान बूझकर। यहाँ ज्ञान का, दीप 'बुझाया' जाता है।
और सत्य के सीने पर, पिस्तौल चलाया जाता है॥

(३)

जाओ बापू। निष्ठुर जग है, इसका हृदय उदार कहां।
ऊपर से ! उजला मन मैला, है अच्छा व्यवहार कहां॥
मुंह देखे की प्रति ! किया हैं, शुद्ध हृदय से प्यार कहाँ।
सत पुरुषों को अरे ! यहाँ पर, जीने का अधिकार कहाँ॥
'हठ धर्मी' से ! जहाँ पाप को, पुण्य बताया जाता है।
और सत्य के सीने पर, पिस्तौल चलाया जाता है॥

(४)

जाओ बापू ! यह निष्ठुर जग, तुम्हें करेगा याद कभी।
महा दुखीः हम पराधीन थे, हुये खूब 'बरबाद' कभी॥
देख दशा तब 'करोमरो' का, तुमने फूंका नाद कभी।
एक लगोटी वाला ही, कर गया हिन्द आजाद कभी॥
महा कृतघ्नी हाय ! यहां, उपकार भुलाया जाता है।
और सत्य के सीने पर, पिस्तौल चलाया जाता है॥

(५)

जाओ बापू ! निष्ठुर जग की, ऐसी ही तो रीत रही।
नई नहीं है बात ! हमेशा, होती यही 'अनीत' रही॥
जग सेवा करने वालों से, किसको 'सच्ची प्रीत' रही।
हार गया जग फिरभी लेकिन, अन्त उन्हीकी जीत रही॥
जिन्हें मारकर इस प्रकार ही, अमर बनाया जाता है।
और सत्य के सीने पर, पिस्तौल चलाया जाता है॥

(६)

जाओ बापू ! यह निष्ठुर जग, कब किसके अनकूल रहा।
हटधर्मी से हाय आँख में, सदा झोंकता धूल रहा॥
कुछ भी कहलो फिर भी अपनी, कहाँ मानता भूल रहा।
जग सेवा करने वालों के, बिछा मार्ग मे शूल रहा॥
यहां कुशलता से कुचक्र का, जाल बिछाया जाता है।
और सत्य के सीने पर, पिस्तौल चलाया जाता है॥

[एक सौ तीन]

(७)

जाओ बापू । किन शब्दों में, अब हम 'पश्चाताप' करें ।
इसमें किसका दोष हाय जब, आँख मींचकर पाप करें ॥
अब क्या है आंसू ढलकायें, कितना विकल विलाप करें ।
क्षमा न हो अपराध हमारा, क्षमा न जब तक आप करें ॥
हाय ! यहां क्यों ? महा पुरुष का, रक्त बहाया जाता है ।
हाय सत्य के सीने पर, पिस्तौल चलाया जाता है ॥

(८)

हमने ही । तुमको मारा, तुम कब हम से मोड़ गये ।
जग सेवा का फल पाया, तब नाता जग से तोड़ गये ॥
अमर सत्य पर जीवन देकर, दो टूटे दिल जोड़ गये ।
युग युग तक गूंजेगी जग में, अमर कहानी छोड़ गये ॥
यहाँ 'कलक' स्वदेश धर्म पर, स्वयं लगाया जाता है ।
और सत्य के सीने पर, पिस्तौल चलाया जाता है ॥

(९)

दीनबन्धु भगवान दया हो, अब न द्वेष की आग जले ।
सत्य अहिंसा की छाया में, भारत फूले और फले ॥
सुयश कीर्ति नित फैले जग में, नहीं पतनकी ओर चले ।
दिव्य आत्मा को बापू की, परमपिता सुख शान्ति मिले ॥
सद्विचार । शुभ प्रेम परस्पर, सब मिलकर उत्थान करें ।
'विकल' देश के लिये सर्वदा, हम सर्वस बलिदान करें ॥